रलू इलाज

सपादक
रमेश वर्मा

साहित्य-रत्न-भण्डार,
आगरा

साहित्य-रत्न-भंडार,
आगरा

द्वितीयावृत्ति
१९४२

मूल्य ॥)

मुद्रक
साहित्य प्रेस आगरा

घरेलू इलाज

रोग क्या है ?

शरीर में गड़बड़ी पैदा होने को रोग कहते हैं। शरीर रोगों का घर है—यह एक कहावत है। लोग इसका मतलब नहीं समझते। कुदरत ने शरीर को भला चंगा बनाया है। वह स्वभाव से रोगी नहीं है। उसकी सावधानी रखनी चाहिए। शरीर मशीन की तरह है। वह अपना काम करता है। मशीन के एक पुर्जे में खराबी होने से, सारी मशीन बेकार हो जाती है। यही हालत शरीर की है। उसके एक भाग में तकलीफ हो, तब सारा शरीर कमजोर हो जाता है। तब उससे ठीक ठीक काम नहीं होता।

शरीर के कई भाग हैं। उनके अलग अलग नाम हैं। अलग अलग काम हैं। सभी अंग अपना ठीक ठीक

काम करते रहें। शरीर के अन्दर से मल ठीक निकलता रहे। भोजन अच्छी तरह पच जाता हो। इन्द्रियाँ और मन प्रसन्न हों। ऐसा शरीर नीरोगी होता है। इन बातों में गड़बड़ी हो तो जानना चाहिये, वह रोग है।

शरीर के भागों का एक दूसरे से लगाव है। शरीर, मन, इन्द्रियाँ एक दूसरे अलग नहीं। इनमें से एक के बिगड़ने में बाकी के बिगड़ने में देर नहीं होती। खराब चलन के लोग नीरोग नहीं कहे जाते। आलस भी एक तरह का रोग है। अधिक और बार बार गुस्सा आना भी रोग है। कुछ लोगों को बुरी लतें पड़ जाती है। उनको भी रोग में शुमार करना चाहिए। जिनके शरीर में कोई कमी नहीं है, दाँत ठीक है, कान, आँख मौजूद हैं, नाक नहीं बहती, चमड़े से पसीना बहता है, शरीर और पैरों से पानी नहीं रिसता, मुँह से बदबू नहीं निकलती, हाथ पैर साधारण काम करते रहते हैं, न बहुत मोटे हैं न बहुत पतले, पेट अपना काम ठीक करता है, वह बादी से फूला हुआ नहीं है, मामूली सर्दी-गर्मी का शरीर पर असर नहीं होता, काम में मन लगता है, काम करने से शरीर थकता नहीं, तब वह निरोग कहा जाता है। इसके खिलाफ रोगी कहलाता है।

जैसा पिंड में है, वैसा ब्रह्माण्ड में है—यह भी एक कहावत है और बिल्कुल ठीक है। संसार जिन चीज़ों से बना है उन्हीं से शरीर बना है। संसार में हवा, पानी, मिट्टी, आकाश (खुली जगह) और आग है; शरीर में भी ये तत्व मौजूद हैं। उनकी अलग अलग तादाद है। उनमें किसी तरह की कमी होती है तो रोग पैदा हो जाता है।

यहीं से मल पैदा होता है। मैदे से रस बन कर शरीर में चला जाता है निकम्मी चीज मल और पेशाब बन कर निकल जाती है। मैदा रोगी होने से मल और पेशाब में भी गड़बड़ी पैदा हो जाती है। मैदे की बाईं ओर तिल्ली है। कलेजा पसलियों के अन्दर दाहिनी ओर है। इसका काम खून साफ करना है। यह पित्त भी पैदा करता है। जिससे खाने की चीजें पचती हैं। (पित्त खराब होने को रोग कहते हैं।)

पसलियों के नीचे खाली जगह है। उसमें फेफड़े हैं। ये सांस की नली के बने हुये हैं। इनमें हवा भरी रहती है। उनसे खून साफ होता है। हवा नथनों में जानी चाहिये। नथनों की हवा गर्म हो कर अन्दर जाती है। मुँह में साँस ना ठीक नहीं है। जब ऐसी खराबी पैदा होती है, तब फेफड़े का काम बन्द हो जाता है। तब शरीर रोगी बन जाता है। चमड़े के नीचे माँस है। इस माँस को नसें दाबे रखती हैं। नस कट जाने से खून और मांस में गड़बड़ हो जाती है। खून सारे शरीर में चक्कर काटता है। खून की सफाई हवा से होती है। साफ हवा न मिलने से खून जहरीला हो जाता है। रोगों को पैदा करता है।

इस तरह का शरीर का ढाँचा है। उसमें कौनसा

भाग कहाँ काम करता है यह जान लेना चाहिये। उसका काम क्या है, यह भी मालूम होना चाहिये। इन थोड़ी सी बातों से हमें रोग का पता लगता रहेगा। शरीर मशीन की तरह काम करता है। यह पहले कहा जा चुका है। मशीन के पुर्जे अपनी-अपनी जगह काम करते रहते हैं। उन सब का काम मशीन को चालू करना है। जिससे मशीन अपना काम करती रहे। जैसे मशीन के पुर्जों में खराबी आजाती है, वैसे ही शरीर के पुर्जों में रोग पैदा हो जाता है शरीर अपनी गति से काम नहीं करने लगे; उसके काम में खराबी पैदा हो-जाय, तब समझलो, शरीर में रोग पैदा हो गया।

रोग क्यों होते हैं?

बीमारी पैदा होने की कई वजह हैं। उन सबका एक नाम भी हो सकता है वह है--शरीर में विकार पैदा हो जाना। शरीर भला चंगा रहना चाहता है। शरीर को खुराक की जरूरत होती है, तब भूख लगती है। पानी की जरूरत होती है, प्यास लगती है। खाल की सफाई होनी चाहिये। हमें नहाने की जरूरत पड़ती है। शरीर के अन्दर गन्दगी पैदा होती है, तब अपने आप निकल जाती है। अच्छी हवा अन्दर जाती है। साँस

से अन्दर की गन्दी हवा बाहर निकल जाती है। चमड़े से पसीना निकलता है। उससे शरीर का मैल बाहर निकल जाता है। पाखाने पेशाब के भी सब काम अपनी रोज की चाल से होते रहते है, शरीर ठीक रहता है। इस सफाई में कमी हो जाती है तो शरीर के अन्दर गन्दगी बढ़ जाती है उस गन्दगी को दूर करना जरूरी है। शरीर में मल जमा हो गया, तब दस्त होते हैं। शरीर की गर्मी कम हो गई, तब ज्वर की गर्मी पैदा हो जाती है। जुकाम, बुखार, दस्त, फोड़ा फुन्सी इनसे शरीर की गन्दगी बाहर निकलती है। यह सफाई कुदरत की ओर से होती है। इस काम में शरीर पर पहले से अधिक दबाव पड़ता है। उसे कष्ट होता है।

रोग की दो ही वजह हैं--एक भीतरी, दूसरे बाहरी। भीतरी वजह में शरीर के विकार हैं। विकार कई तरह से पैदा होते हैं। जिनमें दो कारण खास हैं--

भोजन की खराबी

भोजन समय पर ही करना चाहिये। समय पर ही भूख लगती है। पर लोग इस नियम को तोड़ देते हैं। अच्छा खाना मिल गया तो बिना भूख खा डालते है।

जितनी भूख होती है, उससे अधिक खा जाते हैं, इससे हाजमा बिगड़ जाता है। मेदे को अधिक काम करना पड़ता है। मल ठीक नहीं बनता, दस्त हो जाते हैं या और गड़बड़ी पैदा हो जाती है। बासी और सड़ी-गली चीजें खाने से रोग पैदा होते हैं। बासी रोटी शरीर को फायदा नहीं पहुँचाती; उलटा नुकसान पैदा कर देती हैं। खाना खाने के समय अधिक पानी पीना हानिकारक है। इससे पेट खराब होता है। बहुत से लोग इस बात का खयाल नहीं करते। बहुत लोग खाना खाते समय काम भी करते जाते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिये। कुछ लोग बेहद जल्दी खाना खाते हैं। खाने को अच्छी तरह नहीं चबाते। तब मुँह का काम मेदे को करना पड़ता है। खाना ठीक नहीं पचता। खाने का रस नहीं बन पाता। उससे शरीर को लाभ नहीं होता। मल की बीमारियां पैदा हो जाती है। भूख लगने पर खाना न खाना सेहत को बिगाड़ता है। खाना खाने के बाद दांतों को खूब साफ कर लेना चाहिए। दांतों में खाने का अंश जमा रहने से रोग पैदा हो जाते हैं। दांत खराब हो जाते हैं। पेट में खराबी पैदा हो जाती है।

खराब आदतें

खराब आदतें भी रोग पैदा करती है। शरीर से

यहीं से मल पैदा होता है। मैदे से रस बन कर शरीर में चला जाता है निकम्मी चीज मल और पेशाब बन कर निकल जाती है। मैदा रोगी होने से मल और पेशाब में भी गड़बड़ी पैदा हो जाती है। मैदे की बाईं ओर तिल्ली है। कलेजा पसलियों के अन्दर दाहिनी ओर है। इसका काम खून साफ करना है। यह पित्त भी पैदा करता है। जिससे खाने की चीजें पचती हैं। पित्त खराब होने को रोग कहते हैं।

पसलियों के नीचे खाली जगह है। उसमें फेफड़े हैं। ये सांस की नली के बने हुये हैं। इनमें हवा भरी रहती है। उनसे खून साफ होता है। हवा नथनों में जानी चाहिये। नथनों की हवा गर्म हो कर अन्दर जाती है। मुँह से सॉस ना ठीक नहीं है। जब ऐसी खराबी पैदा होती है, तब फेफड़े का काम बन्द हो जाता है। तब शरीर रोगी बन जाता है। चमड़े के नीचे माँस है। इस माँस को नसें दाबे रखती हैं। नस कट जाने से खून और मांस में गड़बड़ हो जाती है। खून सारे शरीर में चक्कर काटता है। खून की सफाई हवा से होती है। साफ हवा न मिलने से खून जहरीला हो जाता है। रोगों को पैदा करता है।

इस तरह का शरीर का ढॉचा है। उसमें कौनसा

भाग कहाँ काम करता है यह जान लेना चाहिये। उसका काम क्या है, यह भी मालूम होना चाहिये। इन थोड़ी सी बातों से हमें रोग का पता लगता रहेगा। शरीर मशीन की तरह काम करता है। यह पहले कहा जा चुका है। मशीन के पुर्जे अपनी-अपनी जगह काम करते रहते हैं। उन सब का काम मशीन को चालू करना है। जिससे मशीन अपना काम करती रहे। जैसे मशीन के पुर्जों में खराबी आजाती है, वैसे ही शरीर के पुर्जों में रोग पैदा हो जाता है। शरीर अपनी गति से काम नहीं करने लगे; उसके काम में खराबी पैदा हो-जाय, तब समझलो, शरीर में रोग पैदा हो गया।

रोग क्यों होते हैं ?

बीमारी पैदा होने की कई वजह हैं। उन सबका एक नाम भी हो सकता है वह है--शरीर में विकार पैदा हो जाना। शरीर भला चगा रहना चाहता है। शरीर को खुराक की जरूरत होती है, तब भूख लगती है। पानी की जरूरत होती है, प्यास लगती है। खाल की सफाई होनी चाहिये। हमें नहाने की जरूरत पड़ती है। शरीर के अन्दर गन्दगी पैदा होती है, तब अपने आप निकल जाती है। अच्छी हवा अन्दर जाती है। साँस

में अन्दर की गन्दी हवा बाहर निकल जाती है। चमड़े मे पसीना निकलता है। उससे शरीर का मैल बाहर निकल जाता है। पाखाने पेशाब के भी सब काम अपनी रोज की चाल से होते रहते हैं, शरीर ठीक रहता है। इस सफाई में कमी हो जाती है तो शरीर के अन्दर गन्दगी बढ़ जाती है उस गन्दगी को दूर करना जरूरी है। शरीर में मल जमा हो गया, तब दस्त होते हैं। शरीर की गर्मी कम हो गई, तब ज्वर की गर्मी पैदा हो जाती है। जुकाम, बुखार, दस्त, फोड़ा फुन्सी इनसे शरीर की गन्दगी बाहर निकलती है। यह सफाई कुदरत की ओर से होती है। इस काम में शरीर पर पहले से अधिक दबाव पड़ता है। उसे कष्ट होता है।

रोग की दो ही वजह है—एक भीतरी, दूसरे बाहरी। भीतरी वजह में शरीर के विकार हैं। विकार कई तरह से पैदा होते हैं। जिनमें दो कारण खास हैं—

भोजन की खराबी

भोजन समय पर ही करना चाहिये। समय पर ही भूख लगती है। पर लोग इस नियम को तोड़ देते हैं। अच्छा खाना मिल गया तो बिना भूख खा डालते है।

जितनी भूख होती है, उससे अधिक खा जाते हैं, इससे हाजमा बिगड़ जाता है। मेदे को अधिक काम करना पड़ता है। मल ठीक नहीं बनता, दस्त हो जाते हैं या और गड़बड़ी पैदा हो जाती है। बासी और सड़ी-गली चीजें खाने से रोग पैदा होते हैं। बासी रोटी शरीर को फायदा नहीं पहुँचाती; उलटा नुकसान पैदा कर देती है। खाना खाने के समय अधिक पानी पीना हानिकारक है। इससे पेट खराब होता है। बहुत से लोग इस बात का खयाल नहीं करते। बहुत लोग खाना खाते समय काम भी करते जाते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिये। कुछ लोग बेहद जल्दी खाना खाते हैं। खाने को अच्छी तरह नहीं चबाते। तब मुँह का काम मेदे को करना पड़ता है। खाना ठीक नहीं पचता। खाने का रस नहीं बन पाता। उससे शरीर को लाभ नहीं होता। मल की बीमारियां पैदा हो जाती हैं। भूख लगने पर खाना न खाना सेहत को बिगाड़ता है। खाना खाने के बाद दांतों को खूब साफ कर लेना चाहिए। दांतों में खाने का अंश जमा रहने से रोग पैदा हो जाते हैं। दांत खराब हो जाते हैं। पेट में खराबी पैदा हो जाती है।

खराब आदतें

खराब आदतें भी रोग पैदा करती हैं। शरीर से

ताकत से ज्यादा काम न लो। नहीं तो खराबी पैदा होगी। जिस इन्द्री का जो काम है उनमें वही काम लेना चाहिये। नाक का काम मुँह से न लेना चाहिये। गहरी नींद या पूरी नींद न सोने से शरीर में रोग पैदा हो जाता है। गन्दी जगहों पर न सोना चाहिये। मवेशी बँधने की जगह या घूरों के पास कभी न सोना चाहिए। मक्खी मच्छरों से शरीर को बचाना चाहिए। दो आद-मियों का पास सोना बुरा है। बंद या अँधेरे घरों में सोना नुकसान करता है। गन्दे कपड़े पहनने से रोग पैदा होता है। गीले कपड़े पहिनने से खासकर रोग पैदा होते हैं। सिर पर अधिक बोझ लादना बुरा है। नशीली चीजें न खाना चाहिए न पीना चाहिये। इससे शरीर में विकार पैदा होते हैं। अनेकों रोग पैदा हो जाते हैं। वर्षा में अधिक भीगने से बुखार पैदा हो जाता है। धूप में अधिक रहने से बुखार और सिर के रोग पैदा होते हैं। तेज धूप में सूरज की तरफ देखना हानिकारक है। आँखें खराब होती हैं। थोड़ी रोशनी से काम लेने से निगाह कम हो जाती है। इसी तरह और भी बुरी आदतें हैं। खान पान और आराम में नियम रखना चाहिये। ऐसा न करने से विकार पैदा होते हैं। शरीर रोगी हो जाता है।

बाहरी कारणों से भी रोग पैदा होते हैं। अन्दर के विकारों को दूर करना आदमी के हाथ में है। वह आदमी की गलती से पैदा होते हैं। सेहत के कायदों को न जानने से होते हैं। उन पर अमल न करने से होते हैं। कुछ बातें ऐसी है जिन पर आदमी का पूरा काबू नहीं होता। रोग के यही बाहरी कारण हैं। जहाँ बाढ आई हो वहाँ मलेरिया फैलेगा। सूखा पड़ने से भी रोग पैदा होते हैं। हैजा, प्लेग, चेचक और ऐसे बहुत से रोग खास समय पर फैलते हैं।

इलाज क्या है ?

जिन कारणों से रोग पैदा होते हैं, उनको न होने देना या उनके खिलाफ काम करना ही इलाज है। रोग दूर करने से रोग न होने देना कहीं अच्छा है। रोग को आगे न बढने देना चाहिये। इसके लिये परहेज (पथ्य) करना चाहिये। रोग को कम या दूर करने के लिये दवाई देना चाहिये। जैसा ही रोग हो, वैसे ही उसका इलाज करना चाहिये। रोग में लापरवाही या सुस्ती नहीं दिखानी चाहिये। हमारे आस पास बहुत सी चीजें हैं, जो कुदरत ने पैदा की हैं। सब तरह की जड़ी बूटी और वनस्पतियाँ हैं।

ये दवाइयाँ के लिए बडे लाभ की हैं। उनसे लाभ उठाना चाहिये।

रोग से कैसे बचा जाय ?

बीमारियों से बचने के लिये नीचे की बातों पर ध्यान देना चाहिये।

(१) कोई चीज खाओ तो दाँतों को खूब साफ करलो।

(२) महीने मे दो एक बार सारे शरीर में सरसों का तेल मलो। फिर गरम पानी से नहालो।

(३) नाक से साँस लो। नाक के छेदों में छलनी हैं। उससे गर्द रेत मिट्टी अन्दर नहीं जाने पाती। मुँह से साँस नही लेना चाहिये।

(४ खाने के वक्त पीओ मत; पीने के वक्त खाओ मत।

(५) आवेगों को शुरू में ही रोकना चाहिये। नहीं तो वे दिमाग पर काबू कर लेते हैं। तब उनका रोकना मुश्किल है।

(६) गहरी नींद से सोना चाहिये। जानवर बँधे

हों, वहाँ न सोना चाहिये। घूरों के पास और जहाँ मच्छर हों वहाँ न सोना चाहिये।

(७) सफ़र को जाना हो तो कलेऊ ज़रूर कर लेना चाहिये।

(८) सर्दी और तेज धूप दोनों से बचना चाहिये।

(९) कड़ी मेहनत करो तो खुराक खूब खाओ।

(१०) गीला कपड़ा अधिक देर तक मत पहिनो।

(११) गन्दे कपड़े रखना सेहत के लिए हानि-कारक हैं।

(१२) खाना खाने के बाद फ़ौरन पेशाब करने से हाज़मा ठीक रहता है। पेशाब की बीमारी नहीं होती।

(१३) बासी रोटी खाने से रोग पैदा होते हैं।

(१४) पाखाना, पेशाब, छींक, आँसू, भूख, प्यास के वेगों को रोकना बुरा है।

(१५) वर्षा में अधिक भीगने से नुक्सान होता है।

(१६) सूरज निकलने और छिपने के वक्त भोजन करना बुरा है। सोना भी हानिकारक है।

(१७) परदा, तेज हवा, ओस और तेज धूप में न बैठो।

(१८) खाना खाने के बाद फौरन नहाना नहीं चाहिए।

(१६) सुबह की ताजा हवा में फेफड़ा मजबूत होगा।

(२०) हमेशा खुश दिल रहो।

(२१) चिन्ताओं से बचो।

(२२) भोजन के बाद कड़ी मेहनत न करो।

(२३) गन्दी या सड़ी जमीन में रहना रोगों के घर में रहना है।

(२४) बंद कोठरी में आग या दिया जला कर नहीं सोना चाहिए। मौत हो जायगी।

(२५) मक्खी और मच्छड़ों से खाने को बचाना चाहिए। इसकी गन्दगी खाने में जहर पैदा कर देती है।

(२६) नशीली चीजों से सेहत खराब होती है। नशीली चीजे दवा के लिये हैं। मजे के लिये नहीं।

(२७) सिर और पेट को ठण्डा रखना चाहिए। पैरों को गरम।

(२८) खाने में जल्दी नहीं करनी चाहिए। शान्त चित्त से खाना चाहिए।

(२९) भूख लगने पर ही खाना खाओ।

(३०) हाथ, पैर, नाक, कान, सिर को हमेशा साफ रखो।

(३१) सिर पर अधिक बोझ लादना हानिकारक है।

(३२) रोज थोड़ी बहुत कसरत करनी चाहिए।

———

रोग और उनका इलाज
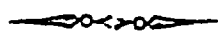
खाल के रोग

खाल या चर्म-रोग कई तरह के होते हैं इनको त्वचा की बीमारी भी कहते हैं। हमारा शरीर खाल से ढका हुआ है। खाल के ऊपर छेद होते हैं। इन छेदों में होकर पसीना निकलता है, जिससे शरीर के विकार बाहर निकल जाते हैं। इसलिये शरीर की खाल को साफ रखना चाहिये। नहाना इसलिये जरूरी है। नहाते समय चमड़े को खूब साफ करना चाहिये। नहा चुकने पर कपड़े से पोंछ डालना चाहिये। इससे खाल के छेद खुल जाते हैं। हवा में बहुत सी चीजें होती हैं। जो सेहत के लिये फायदेमन्द हैं। चमड़े के छेद हवा के

साथ उन चीजों को अन्दर खींच लेते हैं। शरीर पर तेल मलने से खाल साफ हो जाती है। शरीर के अन्दर तेल रम जाता है। उससे बल बढ़ता है।

चमड़े के खास खास रोग और उनकी दवाएँ नीचे लिखी जाती हैं:—

दाद

१—नीम के पत्ते दाद की जगह मलो।

२—माजूफल गुलाब में घिस कर लगाओ।

३—माजूफल फिटकिरी, सुहागा बराबर लो। कूट कर गोलियाँ बनालो। गोलियाँ घिस कर दाद पर लगादो।

४—नीबू, तुलसी, लहसन इनमें से किसी का भी रस लगाओ। आक का दूध भी फायदेमन्द है।

५—नारियल के खोपड़े को जला कर राख को तेल के साथ दाद पर लगाओ।

६—दो रुपये भर कड़वा तेल, उसमें एक माशा सुहागा जला कर मालिश करो।

७—माजूफल एक दाना, गंधक, सुहागा, सफेद राल हर एक दो दो माशा। सब को पीस कर गोलियाँ बनाओ। दाद पर घिस कर लगाओ।

८—अंगरेजी दवाइयों में टिंचर आयोडीन लगाओ। गोआ पाउडर ग्लेसरीन में मिला कर लगाओ।

९—नीबू के रस में, राल, सुहागा, गंधक तीन तीन माशे चार पहर तक कड़ाही में घोटे। बेर के बराबर गोली बनावे। तीन दिन लगावे।

१०—मज्जी २ माशा, चूना १ माशा पानी में पीस कर लगावें।

११—पमार के बीज मही में पीस कर लगावे।

१२—नौसादर १ तोला, सुहागा १ तोला, पारा १ तोला मिला कर गाय की लोनी में लगावे।

१३—सनाय २ माशा, सिरका ६ माशा पीस कर लगावे। तीन दिन नमक मिर्च न खाय।

१४—आध पाव गाय की लोनी १०१ बार पानी मे धोवे। उसमें आमलासार गंधक एक छटाँक मिलावे। उसे कागज पर लपेट ले। एक बासन में सूराख कर कागज का पोंगना बना कर धर दो। कोयला भर कर तेल निकालो। उसे दाद पर लगाओ।

१५—तीन वर्ष के सिंघाड़े को घिस कर लगावे। फिर नीबू का रस लगावे।

१६—लाल चन्दन, सुहागा, अफीम, अमलासार,

दो दो माशा ले। बेर के बराबर गोली बनावे। नीबू के रस में लगावे।

१७—अमरबेल १ तोला, हींगोटा की मिगी १ तोला, पमार के बीज १ तोला, पीस कर मठा में मिला कर कई दिन लगावे।

१८—पारा १ तोला, गंधक १ तोला, हरताल १ तोला, सुहागा १ तोला, चौकिया १ तोला, पीस कर लौनी घी में लगावें।

१९—गंधक १ तो० हरताल १ तो० मोंहा के तेल में मिलाओ। धूनी में दो। फिर पानी में कुल्हड़ को लौटा दो। उस तेल को लगाओ।

नीचे की दवाइयों को काम में लाओ—

२०—घी चुपड़ कर चूना लगाओ।

२१—हारसिंगार पीस कर दाद पर लगाओ।

२२—कसौंदी की जड़ नीबू के रस में घिस कर लगाओ।

२३—पनवाड़ के बीज दही में भिगोदे। सड़ जाने पर लगावे।

२४—अमलताश की पत्तियाँ दाद पर लगाओ।

२५—कुचला सिरका में घिस कर लेप करो।

२६—सज्जी १ तो० कटथान ३ तो० धोये हुये गोघृत में मिला कर लगावे।

२७—अनार का दूध मलो।

२८—पारा को सिरका में घोट कर लगावे।

२९—मेहँदी सिरका में पीस कर लगावे।

३०—१ तो० कपूर तारपीन के तेल में घोट कर लगावे।

३१—खरबूजा की मिगी घोंट कर लगावे।

३२—हींग का सिरका के साथ पीस कर लगावे।

३३—दाद को गम पानी के भीगे कपड़े से रगड़ कर धोले। फिर राड़ का लेप करे।

३४—माजू सिरका में पीस कर लगावे।

फोड़ा फुन्सी

१—गरमी के दिनों की फुन्सियों पर कड़ुवा तेल पानी और नमक लगाओ।

२—नीम की पत्ती एक छटांक पीस कर टिकिया बनाओ। उसे पावभर मीठे तेल में सेंको। इस तेल में एक छटाँक मोम जला कर मरहम बनालो। इसे घाव, फोड़ा, फुन्सियों पर लगाओ।

३—मुरदासंग, पपड़ी, खैर, रुपये रुपये भर

लो। सबको पीस धोये हुये घी में फेट लो यह मरहम जलते घाव पर भी ठण्डक पहुँचाता है।

४—मुरदा सग, सिन्दूर, पपड़ी खैर रुपये रुपये भर लो। चार माशे कपूर मिलाओ। धोये हुये घी में सबको फेंट कर मरहम बना लो। सब फोड़ों पर लगाने से फायदा करेगा।

५—मैनफल पानी में घिस कर फोड़े पर लगाओ।

६—तीसी और अण्डी के बीज पीस लो। उसकी पुलटिस बनाकर बाँधो।

७—नीलाथोथा ४ रत्ती, कमीला २ माशा, ककरौंदे का रस २ तोला, नीम की पत्ती का रस २ तोला सिंदूर १ माशा, गदा बेरोजा २ माशा, नीम का तेल ७ तोला, संग जराहत २ माशा, इनका मरहम बनाकर फोड़े पर लगाओ।

खुजली और खाज

१—नीम की पत्तियों को पानी में उबालो। उस पानी से धोओ और ऊपर से तेल चुपड़ दो।

२—गधक को मीठे तेल में जलाओ। उस तेल को लगाओ।

३–गिरी का तेल रुपया भर लेकर दो माशा कपूर मिलाओ। खरल करके खुजली पर लगाओ।

४–रुपये भर तूतिये के साथ में उसका आधा पारा मिलाओ। उसे खूब खरल करो। छटाँक भर मक्खन में मिलाकर मरहम बना लो। उसे खाज पर लगाओ।

५–दस्त लो, खून साफ करने की चीज खाओ।

६–गंधक छटाँक भर वैसलीन आधसेर। मरहम बनाकर लगाओ।

७–खारी नमक चूरा खाने से फायदा होता है।

८–छटाँक भर खारी नमक आक के दूध में भिगोदे उसे पीली मिट्टी में देकर भस्म करो। उसे सोहा के तेल में ५ दिन लगावे।

९–नीबू का रस २ तोला चमेली का तेल ५ तोला दोनों को खूब फेंटो। रात को मालिस करो। सुबह सिरका और गेहूँ की चुनी मलकर नहा लो सूखी खुजली जाती रहेगी।

१०–ककरोंदे का रस, तारपीन व चमेली का तेल एक-एक तोला ले, खूब मिलाओ। उसमें खाने का चूना आधा तोला मिलाओ। उसे तर खुजली पर लगाओ।

११–आधपाव गर्म तेल में पावभर पिसी हुई हड़ताल छोड़ दे। हड़ताल जल उठने पर उसे नांद भरे

पानी में छोड़ दे। ठंडा होने पर तेल को हाथ से उतार ले। उसकी मालिश करे।

१२–ब्रह्मडंडी के पत्ते ६ माशा, काली मिर्च ६ अदद, दोनों को पानी में पीसकर पीवे।

१३–नीम की कोंपल १ तोला पानी में पीसकर छान कर दो तोला शहद के साथ पीवे।

१४- ३ तो० मैनफल बारीक पीस लें। आधसेर गौ के घी में जोश दे। जब धुआँ न रहे तो नांद भरे पानी में डाल दे। ठंडा होने पर घी को खुजली पर मले।

१५–कटहल का नया मूसला कोयलों की आंच में जलावे। बारीक पीसकर कड़वे तेल में मिला ले। उसे खाज पर मले।

१६–नीचे की दवाइयां काम में लाओ—

आक का दूध छाया में सुखा दे। कड़वे तेल में जलाकर शरीर पर मले। एक पहर बाद बेसन मलकर गरम पानी से नहाले। १७-सहजने की जड़ कड़वे तेल में जलाकर छानकर शरीर पर मल ले। १८–कनेर के पत्ते ४० अदद पावभर सरसों के तेल में जलाकर साफ कर मालिश करे। दोनों तरह की खुजलियों के लिये हैं। १९–बारूद कड़वे तेल में मिलाकर शरीर पर मले। थोड़ी

देर धूप मे बैठकर स्नान कर ले। २०—कलमी शोरा कडवे तेल मे मिलाकर मालिश करे साबुन पानी में पीसकर शरीर पर मल ले। थोड़ी देर बाद नहा ले।

छाजन

१–देशी साबुन मलना चाहिये।

२–घोडे का सुम जला कर कड़वे तेल में मिलाकर लगाओ।

३–आँवला जला कर कड़वे तेल में मिलाकर लगाओ।

४–दाद के नम्बर १४ और १६ नुसखों का मरहम लगाओ।

५–नारियल की गिरी १ तो० भेड़ का खोआ २ तो० मिलाकर लेप करे।

६–आमलासार गंधक ३ मा० चूना खाने का ३ मा० सज्जी ३ मा० लोनी घी में लगावे।

मुहाँसा

१—जवासा पानी में पीस कर या पानी में औटा कर मुँह धोओ।

२—मसूड़ की दाल पीस कर शहद के साथ रात में मुँह पर मलो। सुबह साबुन से मुँह धो डालो।

३—पीली सरसों को दूध में भिगो कर बांध दे। उसको पीस कर मुँह पर उबटन करें।

४—चिड़िया की बीट सुखा कर चहरे पर मले।

५—कलौंजी सिरके में पीस कर रात को मुँह पर लगा दे। सुबह मुँह धो डाले।

६—अजवाइन को सिरके में पीस कर लगा दे।

७—झरबेरी के बेर लाकर पानी में मिला कर लगा दे।

८—चमेली की कली मलने से चेहरा साफ हो जाता है।

९—गाकला का आटा दूध में मिला कर उबटन करो।

१०—मजीठ पानी में पीस कर लगादे।

११—मोर की बीट सिरका में पीस कर मसों पर लगाओ।

१२—चूना सज्जी पानी में घोल कर मस्से को खुजा कर लगाओ।

१३—सीप जलाकर सिरका में घोलकर लगाओ।

१४—मस्से को काट कर जड़ में नमक भर दो ।

१५—बैंगन की भस्म सिरका में मिला कर मसों पर लगाओ ।

खून फसाद

१—अँधेरे पाख में फस्त खुलवा दे ।

२—ब्रह्मदण्डी ७ माशा काली मिर्च ७ आध पाव पानी में मिलावे । १५ दिन तक गेहूँ चने की सूखी रोटी शहद के साथ खाया करे ।

३—सँभालू का तेल १५ दिन लगावे ।

नारवा-नहरुआ

१—नीबू काट कर उस पर तूतिया बारीक करके छिड़के, नारवे पर बाँध दे ।

२—साबुन १ तो० अफीम २ माशा पका के रुई पर धर लेप करे ।

३-सनाय ५ माशा साहतरा ६ मा० अमरवेल ५ मा० उन्नाब ५ मा० मुंडिया ५ मा० मुनक्का १ तो० पाव भर पानी में औटा के आधा रह जाय, उस काढ़े को पीवे, दस्त होंगे ।

४—भांग का पत्र माशा भर रोज २१ दिन हुक्का में पलावे।

५—मकड़ी का सफेद जाला गुड़ मिला कर कई दिन खावे।

६—सांप की केंचुल २ माशा, १ तोला गुड़ में मिला कर गोलियां बनालो। एक एक गोली ७ दिन तक खाय।

७—कुचला पानी में घिस कर शोथ, छाले या घाव पर सुबह शाम लगावे।

८—सिन्दूर १ तोला महीन पीस कर कमीला के गूदे में मिलावे। हींग के लेप के साथ इसे लगावे।

९—सफेद घूँघची की मिगी गुड़ में रख कर ५ दिन तक खावे।

१०—बैंगन में हींग रख कर भुरता करो। उसको नारवे पर बाँधे।

डौरुआ

१—मिलावर पानी में पीस कर ७ दिन लगावे।

२—बाइबिडंग कडुवे तेल में पका कर ७ दिन लगावे।

कोढ़

१—अमरबेल का रस आध पाव, कालीमिर्च ११ पिलावे। पाँच दिन दस्त होंगे। मिठाई, खटाई, गर्म जिन्स न खाय। मूँग की दाल फुलकिया खाय।

२—कल्याना अर्क फटा आधपाव, शहद २ तो० मिला कर ४ दिन पिलावे।

३—नीम का झाग १ छटाँक शहद १ तो० २० दिन पिलावे।

४—सफेद कनेर की जड़ १॥ रत्ती लाल बूरा आध रत्ती चालीस दिन पिलावें।

५—सांठ की जड़ ४ मा० भाँग ४ मा० इन्द्रायणी की जड़ ४ मा० सांक की बूर चार मा० काली मिर्च ७ चालीस दिन छटाँक छटाँक भर पानी में सेवन करे।

६—काले साँप को मार कर बर्तन में रखो। अँगीठी में लेकर भस्म करो। एक तोला मलाई के साथ ४० दिन खाय। बेसन की रोट खावे।

७—अजीर की जड़ काले रस्दों में पकावे। जड़ को १५ दिन घावों पर लगावे।

८—सँभालू का तेल १५ दिन लगावें।

९—बाबची २ गोंगची २ काला बिछुआ २ सिरका में पीस कर १५ दिन लगावे।

१०—तामेश्वर मत १ चावल पान के साथ रोज खाय।

११—जोंक लगा कर खराब खून निकलवावें। फिर नीम की भीतरी छाल, त्रिफला, कड़वा नीम की छाल, कड़वे पीपल और अडूसे के पत्ते बराबर लेकर काढ़ा बना लो। मिसरी मिला कर पकाओ।

सौंठ पित्ती या चकत्ते

१—गेहूँ के आटे में गेरू मिला कर घी में पकौड़ी सेको, उसे खाओ।

२—चकत्ते के ऊपर गेरू की बुकनी मलो।

३—छोटी हर्रों का चूर्ण गुड़ मिला कर खाओ।

४—गूलर की नर्म पत्तियों को पीस कर मिश्री मिलाओ। शरबत बना कर पीओ।

५—गूलर की पत्तियों को पानी में उबालो। उस पानी से नहाओ।

६—सरपत्ते के गर्म पानी से नहाओ।

७—फिटकिरी के फूला गर्म बदन से लगावे।

८—चिरौंजी गर्म बदन में मलो।

९—नॉन और कासनी पिलाओ।

१०—हर्र ६ मा०, कन्याना ऽ- गर्म कर पिलावे।

११—गेहूं की कनिक १ तो० फाँके। मोम का बफारा ले।

१२—नोंन, पानी बदन से लगावे। कम्बल ओढ़ें।

१३—जलनीम १ छटाँक, १ तो० कालीमिच के साथ घोंटे। जंगली बेर बराबर गोलियाँ बनालो। पित्ती के आसार मालूम हों तभी खालो।

१४—नारियल की गिरी व गेरू मिलाकर पीवे।

१५—कैथ के पत्ते १ तो०, कालीमिर्च ११ दोनों को पानी में पीस कर छान कर पीवे।

१६—पेड़े का शर्बत पीना लाभकारी है।

१७—सेंधा नमक घी के साथ पीस कर लेप करो।

१८—त्रिफले का चूर्ण ६ माशे, १ तोला शहद के साथ खाओ।

कंठ माला

१—ज्वार का आटा हरी मकोय के रस में पीसकर लेप करे।

२—छुहारे की गुठली, इमली के बीज पानी में पीस कर लेप करे।

३—लसोढ़े के पत्तों का सेक करे।

४—छिपकली मार कर मीठे तेल में जला कर, तेल को लगाओ।

५—काला साँप मार कर हाँडी में रख धरती में गाढ़ दो। जब गल जावे, उसकी हड्डी को गले में बाँधा जाय।

६—आक के दूध में हीराकस को घिसो। उसका लेप करो। फिर कड़वी, पक्की तोंबी में पानी भर कर ७ दिन पिलाओ।

वरम या सूजन आने पर

१—हल्दी १ तो०, आक की डोंडी १ तो० मकोई के रस या पुराने गुड में रीठा के बीज बराबर गोली बनाओ। सुबह शाम एक हफ्ता खाओ।

२—काला नमक २ माशा, सोंठ ३ माशा, गेरू ३ माशा, मकोय के रस में रीठा के बराबर गोली बनाओ। सुबह शाम खाओ और लेप करो।

३—मकोई के आधपाव रस में तीन माशा काली-मिर्च डालो। उसे पिला दो। गर्मी का बुखार हो तो रुपये भर मिश्री डाल लो। मकोई के रस को गर्म बटलोई में छोड़ कर रस को फाड़ लो।

४—कुचला ३ तो०, कांयफल २ तो०, असगन्ध नागौरी ३ तो०, वाइबिडंग १ माशा लो। कड़ुआ, मीठा, अंडी का और महुआ का तेल मिलाकर कड़ाही में डाल दो। इस मरहम को लगाओ।

५—लोह मेल जरे हुये को ४० दिन पान में खावे।

उँगली पकना

१—फिटकिरी के पानी से धोओ (२) गेहूँ की भुसी और नमक उबाल कर उससे हाथों को धोओ (३) तीसी और अरण्डी की पुल्टिस बाँधो (४) टिंचर आयोडीन लगाओ।

घाव

१—सिलखड़ी बारीक पीस कर घाव पर लगाओ।

२—कनेर की सूखी पत्तियाँ पीस कर घाव पर लगाओ।

३—मुर्गी के पर जलाकर उसकी राख घाव पर लगाओ।

४—घाव पर पेशाब करने से आराम होता है।

५—फिटकिरी को गर्म जल में मिलाकर घाव को धोओ।

६—नीम के पत्ते पानी में उबाल कर घाव को धोओ।

७—सिरस की छाल बारीक पीस कर घाव पर बुरको।

८—मुर्दे की जली हुई हड्डी बारीक पीस कर घाव पर छिड़को।

९—कछुआ की खोपड़ी जलाकर राख करो। मीठे तेल से चुपड़ कर उस पर राख बुरक दो।

१०—फिटकिरी भुनी हुई बारीक पीस कर घाव पर बुरक दो।

११—माजू जलाकर उसकी राख घाव पर बुरको।

१२—कमल और बरगद के पत्ते जलाओ। राख को तेल में मिला कर घाव पर लगाओ।

१३—गुड़ घाव पर बाँधो।

१४—सँभालू के पत्ते पीस कर टिकिया बनाओ। तिली के तेल में जला कर घाव पर लगाओ।

१५—कमीला को सरसों के तेल में खूब गर्म करो। लाल तेल हो जाय तो उतार लो। उस तेल को घाव पर लगाओ।

१६—कुचले को मीठे तेल में जला दो। उस तेल को लगाओ।

१७—एक तोला साबुन, चार तोला तिल, दोनों को पकाओ। नीम की लकड़ी से चलाओ। घावों के लिये लाभदायक तेल होगा।

१८—इमली के बीज जला लो। एक सौ एक बार धोये हुये घी में मिला कर मरहम बना लो।

जलने पर

१—जली हुई जगह पर आलू का रस लगा दो।

२—इमली की छाल जला कर गाय के दूध के साथ लगाओ।

३—दवात की काली स्याही लगाओ।

४—पत्थर का कोयला पानी मे घिस कर लगाओ।

५—बड़ की कोंपल दही में घिस कर लगाओ।

६—अर्डाआ (अरन्ड) के पत्तो का रस निचोड़ दो।

७—ग्वारपाठे का गूदा लगाओ।

८—अलसी का तेल या मीठा तेल चूने के पानी में मिलाकर लगाओ।

९—अंडे की सफेदी लगाओ।

१०—फिटकरी को पानी में घोल कर लगाओ।

११—आदमी के बाल जला कर बारीक पीसकर घी के साथ लगावे।

१२—संगमरमर को बारीक पीसकर जली हुई जगह लगादे।

१३—मेंहदी के पत्तों का पानी मक्खन मिलाकर लगावे।

१४—गर्म पानी से जलने पर अंडी के तेल की मालिश करो।

१५—बेर की कोंपल दही में पीस कर लगादो।

१६—राल बारीक पीस कर गर्म मीठे तेल में डाले। पिघल जाय तो मिला कर लगावें।

१७—मेंहदी के पत्ते पानी में पीस कर लेप करो।

सिर के रोग

सिर में कई भाग हैं। कान, नाक, मुँह, गला आदि। सिर शरीर का सब से कीमती भाग है। दिमाग इसी के अन्दर होता है। इससे सिर की खास सावधानी रखनी चाहिये। तेज गर्मी और सर्दी से उसे बचाना चाहिये। सिर पर अधिक बोझ न लादना चाहिये। चोट फेंट से सिर की रक्षा करनी चाहिये सिर पर किसी बात का असर होता है तो सारे शरीर पर उसका असर होता है। सिर को सर्दी लग जाय तो नाक बहने लगेगी। जुकाम हो जायगा। गले पर उसका असर होगा। आँख और कानों पर भी असर होगा। इसी तरह सिर पर गर्मी का अधिक असर हो जाय तो आँख दुखने लगती हैं।

और भी विकार पैदा हो जाते हैं। पेट की खराबी से सिर दर्द हो जाता है। कहावत है—आँत भारी तो माथा भारी। कब्ज़ो, बुखार, नींद न आना उत्तेजक चीज़ें खालेना, इनसे भी सिर दर्द पैदा हो जाता है।

सिर दर्द

१—तुलसी की पत्ती सुखा कर कपड़छन करके सूंघने से सिर दर्द जाता रहता है।

२—दालचीनी पीस कर लेप करने या दालचीनी का इत्र सूंघने से सिर दर्द नहीं रहता।

३—भंगरैया, तुलसी का पत्ती, लौंग और हल्दी पीस कर सिर पर लेप करो।

४—लौंग घिस कर सिर पर लगा दो।

५—घिसा चन्दन ८ माशे, कपूर १ माशा, मुचुकँद का फूल २ माशा, मेंहदी की पत्ती ३ माशा, केसर १० पत्ती पीस कर सिर पर लेप कर लो।

६—कूठ, अरंडीआ के पेड़ की जड़ और सोंठ, मठा में पीस कर गरम करलो। दिन में कई बार सिर पर लेप करो।

७—गर्मी के सिर दर्द में १—धनिया ४ तोला, सन्दल ४ तोला, पीस कर सिर पर लगाओ। २—कद्दू के बीज ४ तोला खुरफे के बीज ४ तोला, धनिया ६ तोला, मिश्री २ तोला, पानी में पीस कर पीना चाहिये। ३—सूखा आँवला पीना में पीस कर सिर पर लगा दो। ४—सन्दल ४ माशा, धनिया ४ माशा, कपूर केशर ५ रत्ती, पानी में पीस कर लगाओ, ठंडी चीजें खाओ। ५—बकरी का घी माथे पर मलो। ६—१ तोला गुलाब जल में ५ बूंद चन्दन का तेल पका कर उसका भीगा काढ़ा माथे पर रखो। ७—गुलरोगन या आँवला का तेल सिर पर मलो ८—बादाम की गिरी ५ दाना इलाइची के बीज १० दाने, खस ५ रत्ती, कपूर १ माशा, धनिया १० दाने, केसर १० पत्ती, सफेद चन्दन १ माशा, लाल चन्दन १ माशा घिस कर या पीस कर लेप करो। इसका गर्म लेप सर्दी के दर्द को दूर करेगा। ९—बनफसा ६ मा० पीस माथे पैर लगाओ। १०—कासनी, धनियाँ पीस सिर पर लेप करे।

सर्दी के सिर दर्द में

१—लौंग घिस कर सिर पर लगा दो। २—अकरकरा पीस कर लेप करो ३—अफीम, बताशा पानी मिला कर गर्म लेप करे ४—सौंफ ६ तोला,

मुलैठी ४ तोले, मिश्री २ तोला पानी में औटाकर पीओ ५-इलायची के छिलके ८ तोला, दालचीनी १ तोला, पानी मे घिस कर लगाओ। ६-कपूर ३ माशे गेहूँ १ तो० पीस कर माथे पर धरे। ७- बादाम घिस कर लगावे। ८--मचकंद के फूल पीस माथे पर धरे। ९-बकरी का दूध नमक मिला कर तलवा में मले।

आधा सीसी

१-बकरी के दूध में सोंठ घिस कर दर्द पर लेप करो। उसी को सूंघो।

२-रीठे को पानी में घिस कर दूसरी तरफ के नकुए में डालो।

३-अरने कण्डे की राख में आक का दूध डाल कर छाया में सुखावे। उसको सूँघे।

४-देशी कागज की बत्ती जला कर दूसरी तरफ नाक में सुँघावे।

५-नौसादर मले या पान में खावे।

६-जलेबी को रात में दूध में भिगो दे। सुबह खायं। सुबह गर्म जलेबी खाते रहने से सिर दर्द जाता रहता है।

७-प्याज का रस सूँघा।

८-केशर और तुलसी का रस सूँघो।

९—सरसों के पत्तों को छाया में सुखावे। हुलास बनाकर रात को सूंघे।

१०—विषखपरा की जड़ २ मा०, काली मिर्च ३ पीसे। जोर से सूंघे।

आँख

१—आँख आ जाने पर यह लेप करो—कपूर, हल्दी, लोध, फिटकिरी, इमली के बीज, अफीम, रसौत, बराबर लो। गुलाब के अर्क में घोंट कर लगाओ।

२—फिटकिरी, बतासे, अफीम ४ रत्ती, केशर ३ रत्ती इमली के पत्तों के रस में पीसकर गुनगुनी करके लगा दो।

३—२ तो० रसौत नीम के पत्तो के रस से लगावे।

४—गुलाबी फिटकरी १ मा०, गुलाबजल १ तो० मिला कर बूंद-बूंद आँखों में टपका दे। गरमी से दुखने वाली आँखों को फायदा होगा।

५—अफीम, बतासा, फिटकरी पका कर आँख के बाहर लेप करो। सर्दी से आई हुई आँख अच्छी होगी।

६—रात को पैर के तलवे में मेंहदी लगा दो। गर्मी से दुखने वाली आँख अच्छी होगी।

७—मीठे तेल की बत्ती का गुल, नीबू का रस पीतल की कटोरी में घिसकर आँखों में आँज ले।

८—लालचन्दन घिसकर आँखों में लगा दे।

९—त्रिफले के पानी के छींटा दे।

१०—बरगद का दूध आँखों मे लगावे।

११—नीम की पत्ती का रस कान में डाले। बाँई आँख दुखती हो तो दाहिनी ओर डालो, दाहिनी आँख दुखती हो तो बाईं ओर डालो।

१२—पठानी लोध और कपूर को पीस कर पोटली बाँध लो। मिट्टी के पानी भरे बर्तन पर ठंडी करके आँखों पर रखो।

१३—तमाखू का पत्ता १ मा०, भुनी फिटकिरी ४ मा०, गुलाबजल ४ तोला सब को घोंट लो, छानकर शीशी में भरलो। एक-एक बूँद आँखों में डालो।

१४—बतारो की चासनी, फिटकिरी का फूला, अफीम डालकर पलक या आँखों पर लगावे।

१५—ग्वारपाठा का गूदा कपड़े पर रख अफीम और फिटकिरी का फूला भुरक आँख पर धरे।

१६—बबैया के छटाँक भर अर्क में तिली के फूल ६ मा० काँसे की थाली में पैसा से घिसे। उसे आँखों मे लगावे।

आँख की फुली

१—सफेद मिश्री का सुरमा आँखों में लगावे।

२-अपना थूक पानी में घिस कर लगावे।

३-काँच की चूड़ी १ मा०, मिश्री १ मा०, समुद्रफेन १ मा०, चमेली की कली २ मा०, नीबू के रस में चना बराबर गोली बनावे। घिस कर लगावे।

४-मोड़ा १ तो०, फिटकिरी का फूला १ तो०, पीपल छोटी ४, सीपी ४ मा०, इनका सुरमा दिन में तीन बार लगावे।

५-हींग और शकर बराबर ले। बकरी के दूध में ४ दिन खरल करके इसको आँखों में आँजो।

६-सांठ की गाँठ को गाय के दूध में घिसकर लगाओ।

७-मिश्री औरत के दूध में घिसकर आँखों में लगावे।

८-फिटकिरी गुलाबजल में घिस कर लगावे।

९-समुद्रफेन, सेंधानमक, फिटकिरी बिरियाँ बारीक पीस कर सुरमा बना ले। रोज आँखों में लगावे।

मोतियाबिन्दु

१-दखिनी मिर्च १॥ मा०, छोटी पीपर ३ मा०, समुद्रफेन ३ मा०, सेंधा नमक १॥ माशा, सुर्मा २। तोला सबको एक जगह बारीक पीसलो, फिर घोंटो। इसको सलाई से आँजो।

रतौंध

१—सोंठ, मिर्च, पीपल, दही में घोंटो। आँखों में लगाओ।

२—जीरे का शर्बत पीवे।

३—कालीमिर्च दही के पानी में घिस कर लगावे।

४—देशी साबुन पानी में घिस कर लगावे।

५—हुक्के की कीट आँखों में आँज ले।

६—बैल के गोबर के पानी में ३ कालीमिर्च डाल कर आँखों में लगाओ।

७—साबुन ६ माशा, कालीमिर्च ६, फिटकिरी ६ माशा, पानी में आँजो।

८—दही आध सेर, बूरा आधपाव डालकर पीवे।

९—बासे पानी में हल्दी घिस कर लगाओ।

१०—कपूर ३ मा०, नीलाथोथा १ मा०, जीरा ६ मा० पीसकर पोटली बनाले। आँखों पर रखे।

गुहेरी

१—आम के पत्ते तोड़ो, जो चिकना रस निकले उसको गुहेरी पर लगाओ।

२—लौंग को ३६ घंटे पानी में भिगोओ। फिर पत्थर पर घिस कर लगाओ।

३—मोम गरम करके लगाओ ।

४—किशमिश गरम करके चीर कर रखो ।

५—बड़ी कौंड़ी को पानी में घिस कर लगाओ ।

६—पुराना कोयला या लोंग घिस कर लगाओ ।

७—उँगली हथेली पर घिस कर सेक करो ।

८—रसौत घिस कर लेप करो ।

६—आम के पत्ते तोड़ो । उनके डंठल का रस लगाओ ।

कान

१—कान दर्द में—अदरक का रस, शहद, सेंधा नमक और सरसों का तेल बराबर लो, मिलाकर पकाओ । तेल बाकी रहे, उसे गुनगुना कान में डालो ।

२—अदरक का रस, सेंधा नमक, तिल का तेल सब बराबर मिला कर गुनगुना करलो । कान में बूँद-बूँद डालो ।

३—आक के पीले पत्ते पर घी या कड़वा तेल चुपड़ ले । आग पर सेक कर रस निकाल ले । इस रस को कान में डाले ।

४—लहसन, अदरक, सहजना, मूली, केले की डंडी इनमें से किसी एक का रस दो तीन रत्ती समुद्रफेन मिलाले । गुनगुना करके कान मे डाले ।

५—सुदर्शन या तुलसी के पत्तों का रस गर्म कर के कान में डाले।

६—सॅमालू के पत्तों का रस गरम करो। उसमें एक रत्ती अफीम घोलकर कान में डालो।

७—शहद को गुनगुना करके कान में डालो।

८—कान बहता हो तो बबूल या नीम के पत्तों के काढ़े से धोवे।

६—कान में पीव बहता हो तो बबूल की सूखी फलियों का बहुत बारीक चून कान में बुरके। पिचकारी से कान साफ़ करे।

१०—समुद्रफेन, सुपारी की राख कत्था इनको बारीक पीस लो। कान को धोकर इस चूरन को नली से फूँक कर कान में डाल दो।

११—मोर के पजे की हड्डी या सूअर के कान की हड्डी जल में घिस कर कान में डाले।

१२—कान के भीतर घाव हों तो धतूरे के पत्तों का रस गर्म करके कान के बाहर लेप करो। कान के अन्दर नीम के पत्तों का रस गर्म करके डालो।

१३—सज्जीखार, सूखी मूली, हींग, सोंठ पीपल, सोया के बीज बराबर ले लुगदी बना लें। चार सेर काँजी और सेर भर तिल का तेल डाल कर कलई के

वर्तन में पकावे। तेल बाकी रह जाय तो छानकर रख लो। इस तेल को जरूरत के मुताबिक कान में डालो।

१४—कान बहने पर समुद्रफेन, पीली कौड़ी की राख और सिन्दूर की बुकनी छोड़कर नीबू का रस कान में निचोड़ दो।

१५-तुलसी का रस और कपूर छोड़ने से कान का बहना रुक जाता है।

१६-गुलाब के सड़े इत्र को कान में डालने से फायदा होता है।

कान बहने पर

१-सांप की केंचुली जलाकर कड़वे, मीठे तेल में [illegible] र कान में टपका दे।

२-मिसी का अर्क ३ मा० कड़वे तेल में गर्म कर ७ दिन कान में डाले।

३-बाबूना के फूल ६ माशे, नीम की पत्ती ६ माशे, मकोई ६ मा० औटाकर चिलम के सुराख से बफारा दे।

४-सुरमा १ माशा, शहद १ माशा, कान में डाले

५-बाबूना का तेल मोर के पंखों की राख में मिलाकर डाले।

कान की फुंसी

१—कत्था, सुपारी का पान कूट के रस को घी में पकालो, कान में डालो।

२—नीम कीपत्ती केगर्मपानी से कान साफ करो।

३—हाइड्रोजन ग्रोक्साइड अँग्रेजी दवाई है, उसको कान में डालने से अन्दर का मैल फेन के साथ बाहर आ जाता है। उसे रुई से पोंछ कर ऊपर बारीक पिसी हुई फिटकिरी बुरक दो।

४—कान के ऊपर सिर की तरफ बगल में गर्म पुल्टिस बाँधो।

५—कान में गर्म तेल या ग्लिसरीन डालो।

कान में सूजन हो

१—आँवला ४ रुपये भर, हल्दी २ रुपये भर, पानी में पीस लेप करे।

२—बिसखपरे की जड़ पानी में घिस कर लगावे।

३—गेरू, निरवसी, सोंठ रुपये-रुपये भर पानी में पीस कर गर्म कर कर लगावे।

बहरापन

१—गौ के पेशाब मे बेल के बीजों को पीस लो। उसमें पानी, बकरी का दूध, और सरसों का तेल बराबर

मिलाओ। बूंद-बूंद कान में डालो।

२—आक का छोटा पीला पत्ता तोड़ कर गर्म करो। उसका रस कान में निचोड़ो।

३—मूली का रस १ तोला, काला दाना ५ तोला, मीठा तेल २ तोला मिला कर आग पर जलावे। तेल रह जाय उसे बूंद २ कान में डाले।

४—बेल की गूदी को तिल के तेल में पका कर छान कर कान में डाले।

— —

मुँह के रोग

१—मुँह पक जाना—बबूल की छाल आध सेर पानी में पकालो। उसमे कुल्ले करो।

२—ओंठ पक जाने पर या फट जाने पर नमक पीस कर भैंस के घी में मिला लो। उसका लेप करे।

३—जीभ से लार टपकती हो या जीभ में और कोई शिकायत हो तो पपरिया कत्थे का लेप कर लार टपका दो।

४—मुँह पर खराबी होने पर ये दवाइयाँ काम में लावे—चौंकिया सुहागा भून कर खूब बारीक पीस लो शहद में मिलाकर जीभ पर लेप करो। लार टपकाओ।

५—संगराफ पत्थर की बारीक बुकनी ६ माशा

कपूर १ मा० गुलाबजल एक तो० घोंटकर जीभ पर लगाओ। मुँह की जलन दूर होगी।

६—हींग को पानी में घोल कर लेप करे।

७—फिटकिरी का फूला ६ मा० काली मिर्च ३ रत्ती जांवनी हर्रें ६ मा० काला नमक ६ रत्ती। सबको पीस कर लगाने से मसूढ़ों की सूजन दूर होती है।

८—कबाबचीनी ६ मा० पपड़ी खैर ६ मा० छोटी इलाइची के दाने एक मा० घोंट कर जीभ पर लगाओ।

९—छाले पड़े हों तो लौंग या नारियल की गिरी खाओ। पेट की गर्मी से छाले पड़े हों तो दस्त कराओ।

१०—अमरूद के पत्तों के काढ़े से कुल्ला करने से मसूढ़ों को आराम होता है।

११—भटकटैया के काढ़े से कुल्ला करने से मुँह के सभी रोग दूर होते हैं।

१२—केले के पत्तें पर पड़ी ओस की बूँदें चाटने से जलन दूर होती है।

१३—सोंठ २ मा० गेरू २ मा० मकोई का अर्क ६ मा० गर्म कर लेप करे। सूजे मसूड़ों पर आराम होगा।

१४—अमलतास का गूदा १ मा० छोटी हर्र १

मा० मकोई का रस १ तो० गोली बना कर, दाढ़ के नीचे रखे।

१५—सीतल चीनी ३ माशे फिटकिरी ३ माशे पपरिया कत्था २ माशे चून्हे की माटी ३ माशे मंजन बनाकर दाँत माँजे, फूले मसूड़े बैठ जायँगे।

१६—कंठ में तकलीफ—जवाखार, तजबल, पाखर-मूल, रसौत दारुहल्दी, छोटी पीपलें सबको १-१ माशा ले, शहद के साथ गोली बनाओ। मुँह में डाल लिया करें।

होंट फटने पर

१—किसी जानवर के काटने से होंट सूज गये हों तो थोड़ा सिरका मल लें।

२—चोट लगी हो तो रुपये भर जटवार पानी में घिस कर लगावें।

३—फोड़ा हो गया हो तो अलसी की पुलटिस बाँधो।

४—होंट फटे हों तो मोम बादाम के तेल में गर्म कर लगावे।

६—ताजे घी में लाहौरी नमक मिला कर रात को टूँडी में भर कर सोना। [illegible] तो आराम होगा।

दाँतों के रोग

१—सोंठ और सफेद सरसों का काढा बनाकर लेप करो। खून बन्द हो जायगा।

२—कीड़े पड़ गये हों तो कपूर या भुनी हुई हींग दाढ़ मे रखो।

३—अमरूद की पत्ती के काढे से कुल्ला करो।

४—पिपरमेंट लगाने से दाँत का दर्द दूर होता है।

५—दालचीनी के इत्र का फाया दांत के नीचे दबाने से दर्द न रहेगा।

६—बरगद का दूध मलने से दाँतों में मजबूती आती है।

७—अजवायन के काढे के कुल्ले करने से दर्द दूर होता है।

८—दाँत में दर्द हो तो कपूर नमक घिस कर मलो।

९—दाँत हिलते हों तो नमक फिटकिरी बराबर लेकर मलो।

१०—दांत पीसने पर गले में नीलकण्ठी बाँधें।

११—दाँत बैठ जाने पर गाई जल में घिस कर दाँतों पर लगावे।

१२—मसूढ़ों में कीट होने पर कालीमिर्च, काली फिटकरी, काला हलेला, नमक के संग बराबर ले

चूर्न करलो। उसकी मालिश करो।

१३—कीड़ों का दर्द हो तो फिटकिरी पीस कर मलो, दर्द की जगह अकरकरा रखो। चमेली की जड़ उबाल कर कुल्ला करो। जिस दाँत में दर्द हो उसमें अर्क गोखरू मलो।

१४—गर्मी में दाँतों में दर्द हो तो ठंडे पानी से कुल्ला करो। सर्दी का दर्द हो तो गर्म पानी से कुल्ला करो। कालीमिर्च, सेंधानमक, फिटकिरी, बिरियाँ सोंठ बराबर ले, मंजन तैयार करलो, उसे दाँतों पर मलो।

१५—बीमारी में दाँत हिलने पर यह दवाई लगावे—फिटकिरी बिरियाँ २ तो० शहद ५ तोला, सिर्का सब को गर्म करे। गाढा होने पर दाँतों से मले। या (२)—जली हुई छालियाँ, कत्था सफेद, काली मिर्च, मस्तंगी, लाहौरी नमक बराबर लेकर मंजन बनावे। उसे दाँतों पर लगावे।

१६—मसूड़ों में खून आने पर ये दवाइयाँ भी लाभ पहुँचाती हैं—(१) माजूसब्ज ४ तो०, खुराफा ६ तो०, पानी में पीस कुल्ला करे। (२)—बारहसिंगा का सींग २ तो० जला ले, उसमें छोटी राई ४ तो०, सैंधानमक ३ तो० मिलाकर मंजन बना लो। मसूढ़ों पर मलो।

मुँह के छाले

१—घोंघची, काफ़ूर मिलाकर छालों पर रखो।

२—धनियाँ पीसकर उसके पानी से कुल्ला करो।

३—फिटकिरी विरियाँ, नीलाथोथा पीस पानी में औटाओ। एक भाग पानी जल जाय तब कुल्ला करो।

४—नमक सिर्का एक बोतल में भरो। धूप में गर्म-कर कुल्ला करो।

५—त्रिफला पानी में औटाओ। आधा पानी रहे उससे कुल्ले करो।

मुँह के और रोग

१—मुँह से बदबू आती हो तो नमक पीस कर मले। छोटी इलाइची या लौंग मुँह में रखे।

२—जीभ फट जाय तो ईसपगोल या दाने का लुआब निकाल कुल्ला करे। (२)—गूलर की छाल ४ तोला सुरफा के बीज २ तोला पानी में पीस कुल्ला करे।

नाक

१—नाक से खून आने पर ठंडा या बरफ का पानी सुड़कना चाहिये।

२—चोट से खून आये तो घी सुंघाना चाहिए।

३—फिटकिरी भून कर उनकी बुकनी सूँघो। पीनस रोग में लाभ करता है।

४—धनिया ६ माशा गुलबंग के फूल ३ माशा चरा ६ माशा तीनों को मिलाकर पिलावे। नाक का खून बन्द होगा।

५—सिरस की पत्ती माथे पर रखने से खून बन्द हो जाता है।

६ कागज की राख का हुलास सूँघे। खून बन्द होगा।

७—पीनस रोग में नीचे के हुलास लाभ करते हैं। १–सोंठ ३ मा० कड़वे तूमा का गूदा ३ मा० हिंगोटा की गिरी ३ मा०। २—केवड़े के पत्तों का हुलास ३—सुलीम ? छटगन्डी का हुलास। ४—कच, चूना, बबैया के पत्तों का हुलास बनावे। ५–गाय के अरने कण्डे को जलाकर आक के दूध में भिगोवे। उसमें कातिकी तमाखू मिला कर सूँघो।

८—नाक में फोड़ा फुन्सी हो तो फूल सूँघो। लौंग घिस कर र गाड़ये।

गले की बीमारी

१—गले में सूजन और दर्द हो तो अनार की कलियां ६ मा० सूखा धनियाँ ४ मा० पोस्त के दाने ४

मा० मसूर की दाल खड़ी ४ मा० शहतूत के हरे पत्ते सेर भर पानी में गर्म करो।

२—काली मिर्च २ तो० चूल की जमी मिट्टी ४ तो० पीस कर गले पर मले। लार टपकावे।

३—चीज़ न निगली जाती हो या पानी न पिया जाता हो तो अमलतास का गूदा औटा कर गुनगुने पानी से कुल्ला करे।

४—गले की आवाज़ बैठ जाय तो कुलंजन चूसे, अकरकरा चूसे या मुलैठी चूसे।

हिचकी

१—जीभ को ऐंठ कर पकड़ ले।

२—आम के सूखे पत्तों की तमाखू पीवे।

३—लौंग १ माशा शहद में चाटे।

४—गेहूँ की रोटी जलाकर नमक के साथ शहद चाटे।

५—बबूल के काँटे २ तो० औटाकर पीवे।

६—मोर के चँदवे की राख १ छोटी इलायची या ४ लौंग शहद में चाटे।

७—गला हुआ फूस १ मा० काली मिर्च २ शहद में चाटे या गला हुआ फूस हुक्के में पीवे।

८—आक के सूखे पत्तों की तमाखू पीवे।

६—छोटी पीपल और शहद चाटे।

वमन या कै होना

१—चन्दन घिस और उसमें शहद मिलाकर चाटे। पित्त की कै दूर होगी।

२—सेव और वीदाने का रस पीना चाहिए।

३—शहद और दालचीनी का चूरन चाटे।

४—नीबू की दो फाँक करो एक में नमक काली मिर्च भरो। दूसरे में बूरा और काली मिर्च भरो। आग पर गर्म करके दोनों को चूसे।

५—सकोरे में साफ पीली मिट्टी भरो। उस पर पुदीना और कपूर रखो। पानी डालने से खुशबू निकलेगी। उसे सूंघे।

खाँसी

खांसी कई तरह की होती है जैसे सूखी खासी, कफ की खाँसी। दमे की खांसी, किसी खास रोग की खांसी। गर्मी की खाँसी में प्यास लगती है। कफ नहीं निकलता। सूखा ठसका आता है।

१—बबूल का गोंद, कतीरा, बादाम बराबर कूटकर चने के बराबर गोलियाँ बना के खाय।

२—सूखी खाँसी से आवाज बैठ गई हो तो—

खसखस ३ माशे मुलहठी ३ माशे बूरा लाल ६ माशे गुनगुने पानी में २१ दिन पीवे।

३—अदरक १ माशे, शहद २ माशे मिला कर चाटे।

४—सत मुलैठी ३ माशे, काली मिर्च ३ माशे, बूरा मिलाकर सरसों के बराबर गोलियाँ बनावे कफ की खाँसी चली जायगी।

५—सर्दी की खाँसी में प्यास न लगेगी। कफ आवेगा। मुलहठी ६ माशे, अलसी ६ माशे मिशरी १ तोला पानी में औटाकर गुनगुना पीवे।

६—बादाम की मिंगी १ तो० शहद १ तो० पीसकर चाटे।

७—मामूली खाँसी में अड़ूसे के रस के साथ साथ मिश्री मिलाकर खावे।

८—मीठा संतरा खाने से सूखी खाँसी दूर होती है।

९—उन्नाव रात को दाढ़ के नीचे दाब कर सो जाओ।

१०—एक वर्ष के पुराने गुड़ में ३ वर्ष की पुरानी इलाइची मिला कर चाटे, सूखी खाँसी दूर होगी।

११—गोंद बबूल ३ मा०, मिश्री २ मा०, बराबर गोलियाँ बनाकर सुबह शाम खावे।

१२—अड़ूसा की पत्ती ५ तो०, कालीमिर्च १ मा०, छोटी पीपल १ मा०, काला नमक १ मा०, छोटी हर्र ३ तोले, वंशलोचन १ तोला सब को पीसकर गोलियाँ बना ले, उनको चूसे। बिगड़ी हुई खाँसी दूर होगी।

१३—गेहूँ की भुसी १ तो०, बूरा लाल २ तो०, मुलहटी ६ मा०, कठाल भेरा ६ डेढ पाव पानी में तिहाई जल जाय तब पीवे।

१४—नीचे की चीजें खाँसी के लिये मुफीद हैं—जामुन खाय। अकरकरा का काढ़ा पीवे। मिश्री और आँवला मिलाकर खाय। लौंग भूनकर खाय। भटकटैया का रस गर्म कर शहद के साथ खाय।

दमे की खाँसी

१—ढाक के पत्ता आधपाव, नमक एक छटाँक परत लगाकर कुल्हड़ में रखो। इसको कन्डो की आँच में फूंके। एक रत्ती पान या मुनक्का में रख खावे।

२—केले के पीले पत्तों को छाया में सुखा लो। जलाकर राख करो। राख की आधी चीनी मिलाओ। रोज सवेरे एक तोला पानी से फाँक लो।

३—आक की बौंड़ी और नमक बराबर ले कुल्हड़ मे फूंके। चावल भर रोज खाय।

४—आक के पत्तों और काली मिर्च पीसकर गोली बना ले। शहद के साथ तीन बार दिन में खाय घी खूब खावें।

५—अदरक और सहजने का रस मिलाकर गर्म करो। ठण्डा कर शहद के साथ चटाओ।

६—धतूरे के डण्ठल को हुक्का की तरह पीओ या उसका धुंआँ लो।

७—मुलहटी, पीपला मूल, काली मिर्च, काकड़ा सिंगी, नमक लाहौरी, बराबर ले गोलियां बनावे। दिन में दो तीन बार खावे।

८—अंजीर के शरबत मे दालचीनी की बुकनी मिलाकर चाटे।

९—कायफल के काढ़े में ताल मिसरी मिला कर पिलावे।

१०—कच्चे मीठे अनार में छेदकर अफीम भर दो। उसे आंच में भुलभुला लो। उसको खूब घोंट गोलियां बनालो शहद के साथ खाओ।

११—बबूल का छिलका ४ मा० अनार का छिलका ६ माशे अजमोद ६ माशे मुलहठी १ तो० सफेद जीरा

४ मा० काला नमक ४ मा० मुलेठी १ तो० कतीरा ४ मा० पानी के साथ पीसकर गोलियाँ बनाले। दिन में तीन बार खावे।

६—खांसी में खून आता हो तो मीठा अनार छिलके के साथ पानी में पीस कर मिसरी मिलाकर पिलावे।

१०—खून आने पर मुनक्का पानी में पीसकर पिलाया जाय।

११—मुलतानी मिट्टी का पानी भी फायदेमन्द है।

—— ——

छाती और पेट की बीमारियां

१—दिल घबड़ावे तो गुड़हल के फूल ६ मा० गाजवाँ ४ मा० पानी में भिगो कर मिश्री के साथ पीवे।

२—छाती में सर्दी का दर्द हो तो बारहसिंगा और सोठ रगड़ कर कड़वे तेल में गर्म कर मालिश करे।

३—दिल या छाती के दर्द में ये दवाएँ काम में लाओ—संवती के फूलों का मुरब्बा खाय।

४—सूखा धनियां और खुरफा पानी में पीस कर पीवे।

५—आंवले का मुरब्बा खाकर दूध पीवे। दिल की कमजोरी दूर होगी।

६—गर्मियों में फालसे का शर्बत पीवे।

७—अरण्डी को कड़वे तेल में पीस गर्म कर मालिश करें।

८—नीबू का रस मिश्री में मिलाकर चाटे। दिल की धड़कन दूर होगी।

९—सोंठ की चाय पीवें।

१०—मेथी और गुड़ खाय।

११—पसली के दर्द में इन दवाओं को काम में लावें। १—तारपीन का तेल मले। २—लौंग १ मा० काली मिर्च १ छोटा इलायची १ इनका हुलास सूँघे। ३—गुलखैर के बीज ३ मा० मकोई के रस में औटाकर पीवे।

पेट की बीमारियाँ

पेट की बीमारियाँ अनेक हैं—भूख न लगना, पेट में दर्द होना, दस्त होना, खाना न पचना, पेचिस आदि। खाने पीने की खराबी से ही सब बीमारियाँ पैदा होती हैं।

खाना ठीक न पचता हो तो नीचे की दवाइयाँ काम में लावे।

१—जीरा थोड़ा थोड़ा भून डाले। उसमें काला नमक मिला कर शर्बत बना कर पीवे।

सोंठ, अजवाइन, पीपल, सेंधा नमक, काला जीरा, सफेद धनियाँ एक-एक तोला ले। इस चूरन को खाना खाने से पहिले खावे।

३—सोठ, काली मिर्च, ग॰॰क, हींग, सेंधा नमक, काला सफेद जीरा, अजवाइन, पीपल, जवाखार पीस कर नीबू के रस में गोलियाँ बनावे। जरूरत हो तब खावे।

४—भोजन मे पहले अदरक चबा ले।

पेट में दर्द

१—खारी नमक २॥ तो० तीन पाव पानी में औटा कर पिलावे।

२—मूँग की दाल का पानी पीवे।

३—सूजन हो तो सोंठ २ मा०, पीपल १ मा०, शहद में चाटो।

४—सत्यानाशी ३ मा०, बूरा ३ मा०, मिलाकर फाँकें।

५—चारों नमक २ तो०, सोंठ ६ मा०, जीरा ६ मा०, त्रिफला १ मा०, बाइबिरंग ६ मा०, नीबू या महजन के रस में गोली बनावे।

पेट चलना

१—सोंठ, नमक मट्ठी में घिसकर पिलावे।

२—आक की बोंडी, काली मिर्च, सोंठ, गुड़ में बेर के बराबर गोली बनावे। सुबह शाम खाय।

३—ईसबगोल ६ मा० दही में तीन दिन खाय।

४—काला नमक १ तो०, नीबू का रस १ तो० मही में डाल पिला दे।

५—ईसबगोल ७ तोला बताशे के शर्बत में पीवे।

६—आक की बोंडी ३, काली मिर्च ६, हींग १ माशा, प्याज का रस २ माशा, सोंठ ३ माशा, मकोय के रस में बेर बराबर गोली बनावे। सुबह शाम खावे।

७—माँही छोटी २ माशा, माजूफल २ माशा अफीम १ माशा, बबूल का गोंद ४ रत्ती पानी में काली मिर्च बराबर गोलियाँ बनावे। दो सुबह दो शाम को खावे।

पेट फूलने पर

१—नमक खारी २ तोला, तीन छटाँक पानी में गर्म कर पिलावे।

२—आक की बोंडी ३, काली मिर्च ३ डालकर खारी नमक ३ माशा आधपाव पानी में पिलावे या बेर बराबर गोली बनाकर दे।

३—मूसे की बीट ३, भुने हुए चने का चून १ तोला खारी नमक, तीनों की पेट पर मालिश करो।

४—गाय के घी को टुण्डी पर मलो।

५—साबुन की बत्ती मल द्वार पर लगाओ। दस्त हो जायेंगे।

पेचिश

१—सोंठ और लाहौरी नमक घिसकर छटाँक भर पानी में पिलाओ।

२—दही की लस्सी जीरा नमक डालकर पीवे।

३—आक की बोंडी ३ काली मिर्च सोंठ २ मा० काला नमक १ माशा मकोई के रस मे गोली बनाकर खावे।

४—बेल की गूदी या बेल का मुरब्बा खाय।

५— घी भात खाय।

६—नीबू की दो फाँक करके एक में खारी नमक हींग हर्र भरकर चूसे। दूसरे में अफीम भरकर चूसे।

७—अजवाइन भूनकर गुड़ के साथ खावे।

८—अशोक के फूल का काढ़ा पीवे।

९—सोंठ की जड़ ६ मा० काली मिर्च ३ पाव भर गुनगुने पानी में पिलावे।

१०—अनार और ईख का रस पीवे।

११—आधपाव सौंफ के अर्क में ६ माशा गुलकंद डालकर पिलावे।

१२—सौंफ २ तोला, बहेड़े की बुकनी १ तो०

वायविडंग १ तो० चीनी ५ तो० इन सब का चूर्ण ६ मा० खाय दही भात का भोजन करे।

१६—पेचिश में नीचे की दवाइयाँ भी काम में आती है—नारंगी के रस मे मिश्री मिलाकर पीओ। आम की गुठली को भून कर काले नमक के साथ खाओ। सौंफ की बुकनी फाँको। धनिये का काढ़ा पीओ।

तापतिल्ली

१—सज्जी ४ रत्ती, राई ४ रत्ती, बूरा १ माशा सात दिन फांके।

२—सुहागा १ रत्ती बताशे मे भर कर पानी के साथ निगल जाय।

३—कासनी ६ माशा नमक १ माशा सिरका की सिकंजी २ तोला तीन दिन पिलावे।

४—झाऊ का पानी गर्म कर पिलाया जाय। तब-तक और खाना पीना छोड़ दे। फिर एक हफ्ता तक मुनका दाख खावे। फिर दही चावल खाय।

५—सोंफ १ तोला नमक ३ माशा काली मिर्च २ माशा रोज फांके।

६—सिरका एक तोला काला जीरा ३ माशा डाल कर पिलावे।

७—नकछिकनी २ माशा रोज फांके।

ताप की बीमारियां

ताप या बुखार कई तरह के होते हैं। जैसे सर्दी का बुखार, गर्मी का बुखार, मलेरिया बुखार, महीन ज्वर, वगैरः। मामूली बुखार में पूरा आराम लेना चाहिये। मेहनत नहीं करनी चाहिये। खाना भी छोड़ देना चाहिये। बुखार दो एक दिन में अपने आप चला जायगा जरूरत हो तो दवाई करनी चाहिये।

सर्दी का बुखार

१—अजवाइन ६ मा० काली मिर्च ३ पीपल १ काला नमक २ मा० आध पाव पानी में मिलावे। एक ढ़ल्व आग में गर्म कर लाल कर लो। ऊपर की चीजें उस पर छोड़ दो। उसे पीओ।

२—हर मरज बुखार में तो पीपल छोटी २, शहद गुनगुना १ मा० तीन रोज चाटे।

३—खारी नमक १ तो० सोंठ ३ माशा पीपल ३ माशा गिलोय ६ माशा, आध सेर पानी मे गर्म करें। आध पाव पानी रह जाय तब पिलावें।

४—मुर्गी अण्डे का चून ६ माशा कायफल ३ माशा चूल्हे की मिट्टी ६ माशा सबको मिलाकर मर्दन करें।

५—काली मिर्च ३, पाव भर पानी मे गर्म करो। छटांक भर रह जाय तब पीवे।

ज्वार की जूड़ी मलेरिया

१—तुलसी और काली मिर्च का काढा पीवे।

२—गोंद ६ माशा काली मिर्च ५ आध पाव पानी में पिलावें।

३—इलदाना ६ माशा काली मिर्च ७ आध पाव पानी में पिलावें।

४—खारी नमक २॥ तोला तीन पाव पानी में गर्म कर पीवे।

५—नीम की पत्ती और काली मिर्च पीवे।

६—काला चिरायता ६ माशा, काली मिर्च ७ आध पाव पानी में पिलावें।

७—आक की बोंडी गुड़ के साथ खावे।

८—कंजा के पत्ते ६ नीम के पत्ते ७ काली मिर्च ७ आध पाव पानी में पिलावे।

९—सहदेई की जड़ बाँह पर बाँधे। चूंघे या सहदेई ६ माशा काली मिर्च ३ आध पाव पानी में पिलावे।

१०—पीपल २, मिश्री या बूरे की चासनी ३ दिन दो।

११—बताशे ४, इलायची १, पीपल आधी, कालीमिर्च ३, इनकी चासनी चटावे।

गर्मी का बुखार

१—मकोई ६ माशे, सौंफ ६ माशे, मुलहठी ६ माशे, बूरा लाल १ तोला डेढ़ पाव पानी का पावभर रह जाय तब पिलावे।

२—गिलोय, कालीमिर्च, आधपाव पानी में पिला दो।

३—कासानी ६ माशा, काला नमक ३ माशा, मुलहठी ६ माशा, काली मिर्च १ आधपाव पानी में पिलावे।

४—कासानी ६ माशा, धनियाँ ६ माशा, बनफशा

६ माशा, चूरा १ तोला आधपाव पानी में गुनगुना कर पिलावे।

मलीन ज्वर

१—वंशलोचन ३ माशा, गिलोय का सत ३ माशा, छोटी इलायची ३ माशा, शहद ६ माशा, तीन दिन चाटे।

२—छोटी इलायची १, पीपल छोटी १, कालीमिर्च ४, बताशे ४, पानी में चाशनी कर चाटे।

३—खूबकला ६ माशा, गिलोय ६ माशा बनफसा ६ माशा, नीलोफर ६ माशा, कासनी ६ माशा मुलहठी ६ माशा, लभेरा १२ दाने, गाजवाँ ६ माशा चूरा लाल ६ माशा, डेढ़ पाव पानी में औटावे, आधपाव पानी रह जाय तब पिलावे।

४—कासनी ६ माशा, गेरू १ तोला, ज्वर आने से १ घंटा पहले फाँको।

५—वंसलोचन ३ माशा, छोटी इलायची ३ माशा, शीतलचीनी ३ माशा, मिसरी ३ माशा, गर्म कर चटावे।

विषमज्वर

१—एक तोला कासनी को रात में भिगोवे सवेरे २१ दफा छाने। एक तोला मिश्री मिलाकर पिलावे।

२-बीया तोरई के पत्तों का रस ५ तोला, बकरी का दूध ५ तोला मिलाकर पिलावे।

३-सहदेई ६ माशा, कालीमिर्च ५ आधपाव पानी में पिलावे।

४-आंवला, छोटी हर्र, काली दाख, और जीरे का काढ़ा पिलावे।

इकतरा, तिजारी, चौथैया

ये जाड़े के बुखार है। रोज एक ही वक्त पर जाड़े से बुखार आवे उसे इकतरा, एक दिन बीच में छोड़ कर आवे उसे तिजारी और दो दिन का अन्तर देकर आवे उसे चौथैया बुखार कहते हैं।

१—इकतरा के बुखार मे नीचे की दवाइयाँ ले—चिपखपरा की जड़ ३ माशा काली मिर्च ३ आधपाव पानी में औटाकर पिलावे।

२—खसखस २ तोला लाल बूरा २ तोला पाव भर पानी में औटाकर पिलावे

३—कासनी ६ मा० साँभर १ मा० आधपाव पानी में पिलावे।

४—फिटकिरी का फूला बताशे में भर कर बुखार से दो घन्टे पहले पिलावे।

५—दही आध सेर बूरा आध पाव मिला कर पिलावे।

६—घामरा की जड़ २ तोला, काली मिर्च ३, आध पाव पानी में पिलावे।

७—तिजारी चौथैया में हजार दाना ३, कालीमिर्च ७, आधपाव पानी में पिलावे।

८—भाँग ६ माशा, तिली ६ माशा, घी में तले, पांच रोज खावे।

९—तामेश्वर चावल भर, कद्दू के बीज ३ माशे, में खावे।

१०—खसखस १ तोला, मिसरी २ तोला, डेढ़पाव पानी मे औटावे। आधपाव रह जाय तब पिलावे।

११—तिजारी या ज्वर मे हजारदानी बूटी को घोंटकर पिलावे या गले में बाँधे।

१२—जूड़ी व चौथैया में पोस्त खसखसदाना निकला हुआ १ तो० फिटकिरी भुनी ३ मा० पीसकर चूरन बनावे। जूड़ी से १॥ घन्टा पहले सिरका या पानी में पिलावे।

१३—चौथैया ज्वर में धतूरे का ढाई पत्ता, पान के ५ पत्ते पीस कर गोलियाँ बनावे। सुबह शाम एक एक खाय।

१४—काली जीरी ३ माशा, नीम की सींक ११ अदद, रात को गर्म पानी में भिगोदे। सुबह मलकर

छान कर पीवे। एक घंटा पहले १ माशा नौसादर खाले

शीत आने पर

१—कफ की हालत में अदरख का रस ३ माशा शहद मिलाकर चटावे।

२—अदरक के रस में छोटी पीपल १ हर्र छोटी १ शहद ३ माशा चटावे।

३—नागकेसर, कालीमिर्च अदरक के रस में गोली बनावे। पीपल १ शहद में गर्म कर चटावे।

४—आवाज बंद हो गई होतो जावित्री ४ चावल ३ माशा शहद में चटावे।

५—जायफल ६ माशा शहद में चटावे।

६—कूट मॉयफल १तोला, वाइविडंग १ तोला, नागौरी असगंध १ तोला इनका मर्दन करे।

मोमबत्ती का बफारा दे।

८—कायफल १ तोला भुनी अरहर १ तोला चूले की मिट्टी १ तोला मर्दन करें।

९—चिर्लामिली की सूखी जड़ २ माशा पान या बेर के पत्तों में खिलावें।

१०—अड़ूसा के पत्तों की भस्म रत्ती भर पान या बेर के पत्तों में खिलावे। कफ दूर होगा।

तरह तरह के ज्वर

१—वात ज्वर—सोंठ, नागरमोथा, धमामा पीपरा-मूल बराबर लेकर काढ़ा बनाओ। शहद डाल कर पीओ।

२—पित्तज्वर—कायफल, इन्द्रजौ, पहाड़मूल, कूट नागरमोथा बराबर ले। काढा बनाकर पिलाओ।

३—कफ ज्वर—नागरमोथा, सोंठ बराबर ले काढ़ा बनाकर पीवे

४—कफ पित्त—सांफ ६ माशा, बनपसा ६ माशा मुलहटी ६ माशा, खतमी ६ माशा, खब्बासी ६ माशा लभेरे के दाने १२ काढ़ा बन कर पीवे।

५—पित्त के लिये—अनारदाने ३ माशा बूरा २ माशा पीसकर आधपाव पानी में पिलावे। नीबू का अर्क मिश्री के साथ पिलावे। इमली का रस आधपाव ६ माशा बूरा डाल पिलावे। प्याज का रस १ तोला चूना ६ माशा डाल पिलावें।

६—सब तरह का ज्वर—सूरजमुखो की पत्ती जड़ या कोई भाग पीस कर पीवे या लगावे।

७—जूड़ी में एक काली मिर्च धतूरा के रस में पीस कर मूंग के बराबर गोली बनावे।

८—तुलसी के ताजा पत्ते और कालीमिर्च बराबर

ले गोलियाँ बनाले। ज्वर से घंटाभर पहले एक गोली खा ली जाय।

९—धतूरे को मिट्टी के बर्तन में रख आग में देकर राख बनालो। जूड़ी से एक घन्टा पहले पान के रस के साथ खाय।

१०—चिरचिरा के पत्ते ५ तोला कालीमिर्च ३ माशा बराबर गोलियाँ बनाले। गर्म जल के साथ जूड़ी से पहले खावे।

११—नौसादर ३ रत्ती काली मिर्च ३ दोनों को मिलाकर एक घंटा पहले दे।

१२—शिगरफ शुद्ध २ तोला, काली मिर्च ५ तोला पान के रस में खूब घोंट गोली बना ले। पान में ही रख कर खाय।

१३—खसखस की छाल कालीमिर्च औटाकर पिलावे।

छूत की बीमारियां

हैजा

हैजा में कै दस्त हो जाते हैं। शरीर के खून का पानी हो जाता है। शरीर बेकाम हो जाता है। बदहजमी से भी हैजा होता है। पर उसमें रोगी अधिक कमजोर नहीं होता। यकायक हैजा हो जाय तो वह भयंकर है। यह एक जगह से दूसरी जगह फैलता है। इसलिए सावधानी की बड़ी जरूरत है। सफाई रखनी चाहिए। खाने पीने में परहेज करना चाहिए।

१---कपूर चीनी का शरबत पिलावे।

२---अमृतधारा दे।

३—गुलकांकड़ी की जड़ ६ माशा काली मिर्च ११ आध पाव पानी में पिलावे ।

४—प्याज का रस थोड़ी थोड़ी देर बाद दे । खाने का चूना १ माशा मिलाले ।

५—सौंफ का पानी या पीपल की छाल डालकर एक उफान पानी में आजावे, तब पिलावे ।

६—कलमी सोड़ा पेट के नीचे के भाग में लेप करे । पेशाब उतर आवेगा ।

७—लौंग, सौंफ, पोदीने का रस पिलावे । प्यास कम होगी ।

८—गरम पानी की बोतल बगल में लगावे ।

९—पोदीना ६ मा० इलायची ३ माशा इमली की छाल ६ माशा मिलाकर पानी डेढ पाव से आध पाव रह जाय तब पिलावे ।

१०—नीबू की एक फांक में काला नमक, काली मिर्च, पीलल, हर्र भरकर, दूसरी में बूरा भरकर गर्मकर चूसे ।

११—अरूंआ की छाल ६ माशा मिश्री १ तो० आध पाव पानी में पिलावे । छाल का पानी पिलावे ।

१२—कपूर १॥ तोला एक शीशी में पानी भरकर हिलावे उसे पिलावे ।

१३—गुलाब का शर्बत आध पाव मिश्री १ तोला डालकर पिलावे।

१४— आक की बौंडी ६ माशा हीरा हींग १ मा० काली मिर्च ६ माशा नमक २ माशा प्याज के रस में गोली बाँधे। उन्हें रोगी को दें।

चेचक

१— जहाँ चेचक हो, बहेडे का बीज गले या बाँह में बाँधना चाहिये। चेचक का असर न होगा।

२—कालीमिर्च पीस मक्खन में फेंटकर खुजली की जगह लगावे।

३—मुरदासंग १ माशा, बनफसा की जड़ १ माशा, कूट १ माशा, जला हुआ बारहसिंगा १ माशा, अर्मनी बुरादा १ माशा, उशुक १ माशा, मक्खन निकाले दूध में पीस कर चहरे पर लगाये। चेचक के दाग दूर होंगे।

४—हाथीदाँत का बुरादा, अर्मनी का बुरादा, नहाने के साबुन में घोल कर रात को चहरे पर लगालो सवेरे मुँह धो डालो। दाग दूर हो जायँगे।

—५मकरध्वज १ रत्ती, मिश्री के चूरन में मिला कर पानी के साथ चाटना चाहिये। चेचक की ""जोरी दूर होगी

६—चेचक में फल खाने चाहिये।

क्षय रोग (तपैदिक)

१—शहद या काली मिसरी मिलाकर बकरी का दूध पीना लाभ पहूँचाता है।

२—रत्ती भर मकरध्वज १ माशा अडूसा का रस, शहद या अनार शरबत में पीवे।

३—मुलहटी और लालचदन दूध में मिलाकर पीवे।

४—दालचीनी आधा तोला, छोटी इलायची के दाने १ तोला, छोटी पीपल २ तोला, वशलोचन ४ तोला,,मिश्री ८ तोला, पीसकर सितोपलादि चूरन बनाले। बकरी के दूध या शहद के साथ खावे।

५—बीदाना अनार, सेब आदि गुणकारी फल खावे।

सुजाक

१—गर्म चीजें और चावल न खाये जायँ।

२—फिटकिरी का फूला १ तोला,गेरू लाल १ तोला, दूध पानी ३ तोला मिलाकर पिलावे।

३—कलमीशोरा १ तोला, फिटकिरी १ तोला, जवाखार १ तोला जीरा सफेद १ तोला चार दिन खावे।

४—जवाखार १ माशा, दही में मिलाकर खावें।

५—मेंहदी १ तोला, सतबहरोजा १ तोला, पेड़े १ तोला, मुलहटी ६ माशा, रीठे के बराबर गोली बनावे। चार-पाँच दिन खाय।

६—अडूसा की जड़ ३ माशा छटाँक भर मठा में पिलावे।

७—आम की बकुली २॥ तोला। रात को भिगोकर सवेरे चूना १ माशा डालकर पिलावे।

८—अरहर के पत्ते ६ माशा, चूना ३ माशा डाल पिलावे।

९—बबैया के बाज १ तोला रात को भिगोओ। सवेरे शहद ६ माशा डाल पिलावे।

१०—गोदन्ती को नीबू के पत्ते या पान की लुगदी में धर चार सेर कंडों की आँच में फूँको। २ रत्ती पान में धर खावे।

११—गोंदी या लिसोड़े की पत्ती ३ काली मिर्च पीस ओस में धरे। सवेरे ५ बताशे डाल आध पाव पानी में ७ दिन पिलावे।

१२—पुराने मकान की रूनी को भिगोवे। मिसरी मिलावे। आध पाव रोज पीवे।

१३—सत बहरोजा ३ माशा शीतल चीनी ३ माशा मिसरी ३ माशा पानी के साथ फांके।

१४—चिलमिली के बीज १ तोला रात में भिगो कर सवेरे दूध में मिलाकर पिलावे।

१५—फिटकिरी मिले पानी या पोटास परमेंगनेट (अंगरेजी लाल दवाई) की पिचकारी लगावे।

१६—शहद और मेंहदी का काढ़ा पीवे।

१७—एक माशा कलमी सोड़ा या चदन का तेल चीनी में मिलाकर फांक कर गाय का दूध पोवे।

———

हर तरह के रोग

बवासीर

१—खूनी बवासीर की दवाइयाँ नीचे लिखी जाती हैं—प्याज का भुरता बाँधे।

२—मूली और घीआ की तरकारी खाय।

३—नीम का भुरता बांधे।

४—निबौरी १ तोला रसौत १ तोला ककरौंद के रस में चना के बराबर गोली बनावे। शाम सुबह खाय।

५—बर्फ बाँधे।

६—निबौरी की मिंगी एक से सौ तक रोज एक एक बढ़ा कर खावे। फिर इसी तरह घटाता जाय।

७—मोचरस २ माशा दही १ तोला में मिलाकर चाटे।

८—कड़ुवे तूमा के पानी से शौच ले।

९—बेरि के कोयला पर भाँगरे की पत्ती डाल ३ दिन धुआँ ले।

१०—बादी बवासीर में नीचे की दवाइयाँ करे—निबौरी १ माशा गेरू १ माशा तवे को कालोंच १ मा० रात को फाँक कर सोवे।

११—कुंडे की छाल २ मा० एक तोला दही में खावे।

१२—भांगरे का रस २ तोला काली मिर्च १ तोला गोली बनाकर खावे।

१३—हल्दी और कच्ची रार की गोलियाँ गाय की लोनी घी में बनावे। मसों पर लगावे।

१४—रसौत २ तोला कलमी सोरा २ तोला रात को भिगोवे। सबेरे घोंट कर चना बराबर गोली बनावे। सुबह शाम ७ दिन खावे।

१५— घूंस के चमड़े का धुआँ गुदा में दे।

१६—भांग की होटली से सेंक करे।

१७—मूली खावे।

१८—ककरोंदे का काढ़ा पीवे पत्तियाँ मसों पर बांधे।

१६—बताशे में गूलर का दूध टपका कर खावे। खूनी बवासीर दूर होगा।

२०—हरी दूब का शरबत पीवे।

२१-तिलके तेल में नीम के पत्त' को पकाकर मसे पर लगावे।

२२—काले तिल मठा के साथ खावे।

२३—ऊंट की मेंगनी का धुआँ लगावे।

२४—कड़वी तोरई के बीजों को पीसकर मसों पर लगावे।

हाथ पैर सुन्न हों

१—सत्यानासी ४ माशा बूरालाल ४ माशा मिला कर पीवे।

२—हल्दी १ तोला, कोरा खपर १ तोला, खुरासानी अजवायन १ तो०, ढाई माशा रोज गर्म पानी से फाँके।

३—लहसन आधसेर सिरका ढाईसेर पेठा १ तीनों को मिला कर २१ दिन घूरं में गाढे। रूपये भर रोज खावे।

४—बिरमदंडी ६ मा० कालीमिर्च ४ आधपाव पानी में ५ दिन पिलावे।

५—सोंठि ३ माशा पीपल १ शहद में ५ दिन चटावे।

६—सवासेर पानी मे अधापाव शहद डाल पकावे। सेर भर रह जाय तव पिलावे।

६—खुरासानी अजवायन ६ माशा कुचिला ३ तो० गर्म कड़वे तेल में डाल मालिश करे।

हाथ पैर गर्म रहें

१—कापनी १ तोला मिसरी १ तोल आध पाव पानी में पाँच दिन खावे। खटाई गर्म चीज न खावे।

२—त्रिफला १ तो०।मिसरी १ तोला सात दिन फाँके। ·

३—कल्यान सर आधपाव फाड़कर ए ; तोला शहद मिला कर खावे।

गठिया वाय

१—मूँग की दाल का पानी पिलावे।

२—माल कांगनी १ माशा रोज फांके।

३—सोंठ, विधारा, शहद छः छः माशा डेढ़ पाव पानी में आटावे। आध पाव रह जाय तब पीवे।

४—सत्यानाशी ३ माशा बूरा ६ माशा तीन रोज फाँके।

५—अन्नो का ढाई पत्ता कालीमिर्च ७ आधपाव पानी में पिलावे।

६—अरहर की दाल, मोंठ की दाल अदरक की तरकारी गर्म चीजें खावे।

७—त्रिफला ६ माशा पुराने अरण्ड की जड़ ३ माशा एक सेर पानी से आधपाव रह जाय तब पीवे।

८—नाह १ तोलापीस कर दर्द कीजगह लेप करे।

९—बादाम की मिगी १ पिस्ता १ जमालगोटा १ अण्डी १ इनका तेल निकाल बताशे में एक एक बूंद डाल खवावे।

१०—मीठा तेल छटाँकभर, वायविडंग छटाँकभर गर्म कर लेप करे।

११—सिरका में घी डाल गर्म करो। लेप करो।

१२—अड़ूसा, संभालू, थूहड़, सहजना, वकायन, धतूरा, आक अंडोसा सब के पत्ते ६-६ माशा ले, टिकिया बना कड़ुये तेल में पकावे तेल मुफीद होगा।

१३—सोंठि, विधारा छः छः माशा १ तोला शहद में खाय।

पेशाब बन्द हो

१—टेसू के फूलों का वफारा लो गर्म कर मसान

पर बाँधो टुण्डी पर पानी ढालो। सोड़ा धरो।

२—लिंग पर ठण्डा पानी ढालो।

३—मसान पर सहजने का भुरता बाँधो।

४—लिंग पर गाय की लोनी घी मलो।

५—चौरई गर्म कर मसान पर बाँधो।

६—कलमीशोरा १ तोला, जीरा ६ माशा मठा में पिलावे।

७—बैंगन के बीज ६ माशा, कालीमिर्च ५ आध पाव पानी में पिलावे।

८— सौंफ १ तोला, मिसरी १ तोला डेढ़पाव पानी में औटावे। आधा पानी रह जाय तब पिलावे।

बार बार पेशाव आता हो

झाड़ की बारू ३ मा०, सौंफ ६ मा०, बूरा ६मा०, पावभर पानी का छटाँक रह जाय तब पिलाओ।

२—सौंफ ३ मा०, सोंफ भुनी ३ मा० बूरा ६ मा०, पीसकर फाँको। गर्म चीज और खटाई न खाओ।

३—सींक की चूर ३ मा०, मिश्री ६ मा० पावभर पानी का आधा रह जाय तब पिलावे।

४—सौंफ, बूरा एक-एक तोला गर्म करो। चौथाई पानी जल जाय तब पिलादो।

मंथिका सूर दर्द

१—गाय का घी ६ मा०, बादाम की मिंगी ३, नाक में चढ़ावे।

२—खसखस १ तो०, बादाम ५, बूरा २ तो०, सात दिन पिलावे।

३—बिसखपरा की जड़ घी में मिलाकर नाक में सुँघावे।

४—तिली १ तो०, कायँफल १ तो०, गुड़ १ तो०, गोली बना घी में गर्म कर चटावे।

५—कसीस १ मा०, आम की गुठली घिसकर माथे पर लेप करे।

६—कड़ुवे तूमा का गूद ३ मा०, सोंठ ३ मा०, हिंगोटा की मिंगी ३ मा० हुलास सुँघावे।

७—अखरोट की मिंगी मिसरी मिलाकर फाँके।

८—चूना ६ मा०, नौसादर ६ मा०, सीपी में भर सुँघावे।

९—अरने कण्डों की राख में आक का दूध डाल कर सुखावे। इस हुलास को सूँघे।

१०—माथे को को घी से चुपड़ जमालगोटे का लेप करे।

११—पीपरामूल ४ मा०, बूरा ४ मा० रोज फाँके।

१२—तीसरे पहर अखरोट खिलावे।

१३—सोंफ १ तो०, बूरा २ तोला ग्यारह दिन फांके।

१४—सरस के अर्क कोमुँह और नाक में डाले।

मिरगी रोग

इस रोग में हाथ पॉव एँठ जाते हैं। बेहोशी आजाती है।

१—खटमल औरत के दूध में पीस नाक में हुलास सुँघावे।

२—आदमी की हड्डी रोज १ मा० पन्द्रह दिन तक खिलावे।

३—गाय का घी और पानी छटॉक-छटॉक भर गर्म करे। पानी जल जाय तब घी को ६ मा० रोज रोटी के साथ खावे।

४—पीपल की जटाओं का धुआँ नाक में सुघावे

५—कोठे की नस नीचे की ओर मले।

६—गुड़ का सिरका आधपाव, अकरकरा १॥ तो० घोंट कर गोली बनावे। शहद के साथ खावे।

लक़वा

१—सवासेर पानी में आधपाव शहद डालकर गर्म करे। सेरभर पानी रह जाय तब पिलावे।

२—बादाम, जायफल, अरहर की दाल खिलावे।

३—कड़वा तेल आधपाव, खुरासानी अजवाइन ६

मा०, कुचिला ३ तो० मिलाकर मालिश करो।

४—अंडी का तेल पावसेर मीठा तेल पावसेर, कनेर की जड़ २ तोला, अरंड की जड़ २ तोला, पचोंगुरा स्याह २ तोला, कारी पाडि २ तोला, बाइविडंग ६ मा०, अफीम ६ मा०, कायँफल ६ मा० मिलाकर मालिश करो। अरंड या पाठ के पत्ते बाँधो।

५—मत्रो का रस ३ तो० आक का दूध ३ तो०, धतूरे का रस ३ तो०, संभालू का रस ३ तो०, सहजने का रस ३ तो०, पाठि १ तो०, लौंग १ तो०, पीपरामूल १ तो०, जायफल ६ मा०, कॉयफल ६ मा०, हल्दी १ तो०, अलसी २ तो०, मीठा तेल पावभर कडुआ तेल पावभर, अंडी का तेल पावभर गर्म कर ७ दिन मालिश करो॥

पथरी रोग

१—सौंफ २ तोला, बूरा ३ तोला, आधसेर पानी में गर्म करो, डेढ़ पाव रह जाय तब पिलावे।

२—पथरमगा की जड ६ माशा, आधपाव पानी में पिलावे।

३—चिरैंया की केर ६ माशा, आधपाव पानी में पिलावे

४—गोखरू का काढ़ा पीवे।

५—गोखरू का चूरन १ माशा, शहद १ माशा, मिलाकर चाटे। बकरी का दूध पीवे।

६—एक तोला तालमखाने की जड़ का काढ़ा बना मिसरी डाल पीवे।

७—अजवाइन को मूली के रस में पीस कर पीवे।

८—सतावर को गाय के दूध में घिस कर पीवे।

६—नीम की पत्तियां जलाकर राख को पानी में भिगो दो। राख बैठ जाय तो पानी निकाल कर गर्म करो। पानी सुखा कर नीम का खार बनाओ। जवाखार के साथ खाओ।

जलंधर

१—मकड़ी का जाला गुड में मिलाकर सात दिन गोली खावे।

२—मुनक्का, बादाम, ऊटनी का दूध पिलावे।

३—अड़ूसे के पत्ते सवासेर पानी में औटावे, छटॉक भर रह जाय उसमें से २ माशा रोज खावे।

४—कचनार के पत्ते औटाकर या मकोय का पानी पिलावे।

५—गंधक १ तोला और गाय के गोबर को गर्म कर लेप करे।

६—लोहे के मैल के टुकड़े आक के दूध में भिगो

कर मात आंच देकर जलावे । ४ रत्ती से माशे तक पान में धर ४० रोज खावे ।

पेट के कीड़े (पटेरे)

१—दूध गुड़ या दूध बूरा पिलावे

२—रसौत १ माशा, कबीला ३ माशा, वाइविडंग माशा गुड़ १तोला । तीन छटाँक पानी का आधपाव रह जाय तब पिलावे ।

३—अनार का छिलका डेढ़पाव पानी का आधपाव रहजाय तब पिलावे ।

जहर खा लेने पर

१—नौसादर नीबू के ऊपर डाल कर चुसावे ।

२—इमली की छाल ऽ=, नीबू की छाल ऽ=, अरड की कोंपल ऽ-, नारी के पत्ते तीन, पानी में गर्म कर पिलावे ।

३—कै या दस्त करावे ।

४—राई १ तोला, पानी में पीस कर पिलावे ।

५ पीतल की काइ औटाकर पिलावे ।

६—ज्यादा खटाई खिलावे ।

७—नारी के पत्ता ३, काली मिर्च आधपाव, पानी में पिलावे ।

८—१ पत्ता अफीम, ३ कालीमिर्च, पाधपाव पानी में पिलावे।

६—तेल अफीम का जहर दिया हो तो गूलर की पत्ती छः माशा पीस कर पिलावे।

अतिसार

१—गुल कॉकरी जड़ ६ माशा, कालीमिर्च ११ आध पाव जल से शाम सवेरे पिलावे।

२—साबूदाने की भात मिसरी या बूरा डालखावे।

३—त्रिफला छटॉक भर, काला नमक १ तोला, खारी नमक १ तो०, आक के फूल १ तो०, हींग चार आने भर सहजने के रस में बेर बराबर गोली बनावे। सुबह शाम सात दिन खिलावे।

४—मिसरी ६ मा०, चाशनी बनाकर २ आलू बुखारा का गूदा, २ इलायची और ४ रत्ती अफीम मिलावे उसे चटावे।

५—नीबू की दो फांक करे। एक में ४ रत्ती अफीम भरे।। दूसरी में मिसरी। गर्म कर चूसे।

गंभीरी

१—सिंदूर ६ माशा, गेरू ६ माशा, मुरगी के अंडे का रस, तीनों का लेप करे।

२—गेरू सिंदूर का लेप कर गूलर उबालकर बांधे।

३—हींस की जड़ हल्दी के साथ पीसकर लेप करे।

४—आक की जड मठा में गर्म कर बाँधे।

त्रिसारा

१—त्रिस खपरा की जड़ बालक के पेशाब में गर्म कर बाँधे।

२—पुरानी रुई का फाया पानी में और घी में छौंक कर बाँधे।

उन्हौंसूर

१—दही से चुपड़े।

२—आदमी की हड्डी पीस कर लगावे।

३—कत्था, मोम, सिंदूर, नीला थोथा गाय के घी में लेप करे

वधि

रागों में होती है।

१—कालीमिर्च कालीजीरी का लेप करे।

२—भूमल पानी में बुझाकर बाँधे।

३—ऊँट की लेंडी गरम कर बांधे।

चिटावरि

पिंडलियों पर होती है।

१—भैंस का गोबर बालक के पेशाब में खदकाकर बांधे।

२—भाड की बालू बाँधे।

३—हरिया थोथी १ तो० अमिया हल्दी १ तोला मोर के पख १ तोला, गाय का दही दो पैसा भर गाय के घी में लेप करे।

साँप काटे पर

१—काटने की जगह से फौरन खून निकाल दे। ऊपर जोर से बाँध दे।

२—गाय का घी, तूतिया, नाक में पिचकारी दे।

३—नीला थोथा सुंघावे।

कुत्ते का काटा

१—२ छटॉक शहद १ छटाँक खारी नमक गुन-गुना करके पिलावे।